संकल्पा । करिकिय यज्ञ सहित शुभकल्पा ३१६ दो० । तदुपरि तिहि अनुभाव सो तीनों भुवन अनूप । कीर्त्ति दिशु विस्तृत भई शोभा जनु उडुभूप ३१७ सो० । बुभुजे भोग अनेक महीदेव कृपयातदा । तिहूंलोक में एक जानि आपको हर्षयुत ३१८ चौ० । गे सुर इत उत जबहिं पलाई । अदिति देव माता दुखपाई ॥ एक समय कश्यप गृह आये । अदितिहिं मलिन देखि तहँ पाये ३१९ दीन बदन लखि पूंछीबाता । काहे मलिन भये तुवगाता ॥ कोऊअतिथि द्वारपर आवा । कागो बिमुख न बांछित पावा ३२० जाके भुवन अतिथि कौ आवै । अर्चित वार्य्यादिकहु न जावै ॥ फेरु राजगृह सम गृह तासू । जात पुण्य लै अघ दै जासू ३२१ की नहिं होम कीन्ह लखि बेला । ब्राह्मणाग्नि हरि मुख मखं पेला ॥ कहौ कुशल हैं पुत्र तुम्हारे । प्रगटी संशय अमित हमारे ३२२ सुनि पति बचन अदिति कह बैना । सुनिये स्वामि सकल गुण ऐना ॥ बिमुख न ब्राह्मण अतिथि हुताशा । बृत्त सुतन को करौं प्रकाशा ३२३ आइ सपत्न जीति दिव लीन्हा । काढ़ि सकल मम पुत्रन दीन्हा ॥ पुत्रनको दुख देखि अपारा । मैं बूड़न लागी दुखधारा ३२४ शत्रुन सों रच्छा करि दीजै । पावैं पुत्र राज्य सो कीजै ॥ सुनि मारीच बचन तिय केरे । हँसि बोले हरि माया हेरे ३२५ अहोविष्णु मायाबलखानी । कीन्हों नेहवद्ध जगआनी ॥ कानात्मा भौतिक यहदेही । कात्मा माया परेसनेही ३२६ काके कौन पुत्रपति जाना । केवल कारणमोह बखाना ॥ आदिं पुरुष सुंदर भगवाना । सुमिरौ तिनहिं होइ कल्याना ३२७ सोई कार्य सिद्धि तुव करिहैं । करि मनोर्थ पूरण सुख भरि हैं ॥ सुनिइमि अदिति जोरि कहपानी । पूजन बिधि प्रभु कहौ बखानी ३२८ जामें शीघ्र द्रवैं भगवाना । होवै मम पुत्रन कल्याना ॥ सुनि कश्यप बोले सुख पाई । सुनौ प्रियाव्रत केर उपाई ३२९ एक समय ब्रह्मा सों जाई । प्रजा कामना हेत उपाई ॥ पूँछा सोई कहव बखानी । केशव तोषण

व्रत सुख दानी ३३० फाल्गुन धवल पक्ष जब आवै। द्वादश दिवस पयोव्रत गावै ॥ भक्ति सहित पूजे हरि काहीं। राखि मनोरथ निज उरमाहीं ३३१ प्रथम दिवस सो या बिधि कीजै। भगवद्भक्ति हृदय धरि लीजै॥ सिनी बालि उठि ऊषसि काला। क्रोड बिदीर्ण मृदालै हाला ३३२ लेपै देह माहँ लै सोई। लावत मंत्रपढ़ै यहजोई ॥ त्वंदेव्यादिवराहेणरसायाःस्थानमिच्छता उद्धृतासिनमस्तुभ्यंपाप्मानंमे प्रणाशय ३३३ मृदा लगाइ करै अस्नाना। पूजन करै बहुरि भगवाना ३३४ दो०। सूरज गुरु जल अग्नि में पूजनसुभगबखान। अथवास्थंडिलके विषे पूजै हरि सुखदान ३३५ नमस्तुभ्यं भगवते पुरुषायमहीयसे। सर्वभूत निवासाय वासुदेवायसाक्षिणे ३३६ नमोऽव्यक्तायसूक्ष्मायप्रधान पुरुषायचचतुर्विंशद्गुणज्ञायगुणसंख्यानहेतवे३३७नमोद्विशीर्षे त्रिपदेचतुःश्रृंगायतंतवे। सप्तहस्तायसज्ञायत्रयी विद्यात्मनेनमः ३३८ नमःशिवायरुद्रायनमःशक्तिधरायच। सर्वविद्याधिपतये भूतानांपतयेनमः ३३९ नमोहिरण्यगर्भायप्राणायजगदात्मने योगैश्वर्यशरीरायनमस्तेयोगहेतवे ३४० नमस्तेआदिदेवायसा क्षिभूतायतेनमः। नारायणायऋषयेनरायहरयेनमः ३४१ नमोम रकतश्यामवपुषेधिगताश्रियेके शवायनमस्तुभ्यं नमस्ते पीतवा ससे ३४२ त्वंसर्ववरदःपुंसांवरेण्यवरदर्षन। अतस्तेश्रेयसेधीराःपा दरेणुमुपासते ३४३ अन्ववर्त्ततयंदेवाः श्रीश्चतत्पादपद्मयोः। स्पृहयंतइवामोदं भगवान्मे प्रसीदताम् ३४४ चौपाई। इन मन्त्रन सों पूजन कीजै। आवाहनादि प्रथम करीजै ॥ पाद्य अर्घ आचमन समेता। गंध माल्य आदिक सुख सेता ३४५ पयसों हरि अस्नान करावै। बस्त्राभरण सुगंध चढ़ावै॥ धूप दीप नैवेद्य लगावै। द्वादशाक्षर मंत्र सुहावै ३४६ पक्वक्षीर नैवेद्य बनावै। शाल्यन्नंविभवेसंति लावै॥ सर्पि सगुड़ नैवेद्य लगाई। करै होमपुनि हरिमन लाई ३४७ सो नैवेद्य भक्त कहँ देवै। वा आपै भक्षण करिलेवै॥ बहुरि हरिहि आचमन करावै।

प्रेम सहित ताम्बूल खवावै ३४८ मंत्राष्टोत्तरशत जपिलीजै। अस्तुति बहुरिप्रदच्छिण कीजै ॥ मस्तक भूमि धारिपरनामा। करै दण्डवति हरिसुखधामा ३४६ धारै मस्तक परपुनि शेषा। करै विसर्जन बहुरिविशेषा॥ द्वैवर बिप्रन भोजन दीजै। तिन आज्ञा लै भोजन कीजै ३५० या बिधि प्रतिदिन कीजै नेमा। पायस भोजन द्विजन सप्रेमा ॥ पायस भोजन आपहु कीजै। द्वादश दिवस नेमधरि लीजै ३५१ प्रतिपत्तिथ्यारंभण करिकै। त्रयोदशी लगि आनँद भरिकै ॥ ब्रह्मचर्य रहिकरभू शैना। मज्जन त्रिषवण करै सचैना ३५२ असदालाप भोगसब त्यागै। तजिहिंसा हरिपद अनुरागै॥ या बिधि त्रयोदशी जब आवै। पंचामृत सों हर्य्यं न्हवावै ३५३ पूजनकरै बिबिध बिधि सोई। जासों हरिप्रसन्न अति होई॥ पूजै पुनि आचार्य्य सहेता। वस्त्राभरण धेनु युत देता ३५४ पुनिप्रसन्न ऋत्विज सब कीजै। स्वाद्वन्न युत भोजन दीजै ॥ आवैं और बिप्रजे कोई। दीजै भोजन तिनको सोई ३५५बहुरिदच्छिणा गुरुको दीजै। ऋत्विज सकल सुखी पुनि कीजै ॥ स्वपाकादि जे कोई आवैं। मान सहित अन्नादिक पावैं ३५६ पुनि आपहु सब बन्धु समेता। भोजन करै धारि हरिचेता॥ नृत्यगान युत अस्तुति करई।सुनै कहै गाथासुद भरई ३५७ या बिधि नामपयो ब्रत एहा। ब्रह्मा मोसों कहो सनेहा॥ सो यह प्रिये सुभग ब्रत कीजै। शुद्धभाव सों हरिमन दीजै ३५८ सकल ब्रतन उत्तम ब्रतमानो। यज्ञन परेयाहि मनआनो॥ तपन माहँउत्तम तपएहा। दानेश्वर तर्पण युतनेहा ३५६ सोई नियम सोइ यमजानो। तपोदान ब्रत यज्ञहु मानो॥ जासों हरिप्रसन्न द्रुतहोवैं। होइ प्रसन्न मानस दुखखोवैं ३६० सुनि पति बचनादिति हरषानी। ब्रतहि करनदृढ़ मति उरआनी॥ करिमन बुद्धि एकहरि माहीं। कीन्हो तबहिं पयोब्रत काहीं ३६१ कीन्हो अदिति पूर्णब्रत जबहीं। प्रगटे आदि पुरुषहरि तबहीं॥ पीताम्बर शुभ धारण कीन्हे। चारि भुजा

आयुध तिन लीन्हे ३६२ चक्रगदा दरपद्म सुहावा। देखि अदि-
ति अतिशय सुखपावा ॥ भुविकायेननाम बहोरी । बिह्वल
गात प्रीति नहिंथोरी ३६३ उठि बहोरि बद्धांजलिसोई । अस्तुति
करन चहत नहिंहोई॥ आनँद अधिक श्रवण चख आंसू। भईभौन
पुलकाकुल भासू३६४दर्शनोत्सव वेपथुगाता। प्रीत्याशनै कही
कछुबाता॥उद्दीक्षति पीवति चख सो जनु। अस्तुति करन लागि
धरिहरिमनु३६५जैयज्ञेश यज्ञपुरुषाच्युत। तीरथ पादपाप हारकद्भु-
त॥ मंगल श्रवण नाम है जोई। लोकनके दुखटारत सोई३६६+
मोपर कीन्ही कृपा घनेरी । दै दर्शन दारी दुखढेरी ॥ विश्व हे-
त धारत अवतारा । विश्व भवन थिति संयमकारा ३६७ पुर
गुण शक्ति गहत निज इच्छा। लै अवतार देत जग शिक्षा ॥
स्वस्थ रूप अतिही सुख रासी। घट घटंतर बाहर बासी ३६८
दो०। शश्वत उपबृंहित सुयश पूरणबोध महान । व्यापादित
आतम तमस हरयेनम सुख दान ३६९ परमायुः बांछितकुणप
लक्ष्मी अनगन जोइ। द्योभूरस सब योग गुण त्रिवरग ज्ञानहु
सोइ ३७० तुम कहँ नाथ प्रसन्न करि पावत यह सब तौन।
औरो मन बांछित सबै शत्रु जंयादिक कौन ३७१ याबिधि अ-

+ शश्वत कहिये निरंतर उपबृंहित कहिये बढ़ा है सुयश और पूरण बोध जिनका विश्व भवन कहिये विराट स्वरूप थिति कहिये पालन संयम कहिये नाश ३६७ पुरु कहिये बहुत सु कहिये सुंदर अस्थ कहिये स्थित परि पूर्णाचल ब्रह्म खवत् यथाकाश स्थिते नित्य नित्यादि गीतामें भगवत् का वचन है तासों घटांतर बाहर बासी है यथा सर्वगतं सौक्ष्म्यादाकाशंनोप लिप्यतेत्यादि गीता का वचन है तासों आत्मतम समाया में न लिप्यते त्ययं ३६८ व्यापादित नित्य निरस्त कहिये त्यक्तआत्मनितम कहिये माया लक्षण जिनकरिके तिनके अर्थ ३६९ परमायुःब्रह्मायुः बांछित कुणप कहिये अभिलाषित शरीरब्रह्मेन्द्रादीन् अनगन कहिये अप्रमान द्यो भूरस कहिये आकाश पृथ्वी पाताल सबयोग गुण कहिये अणिमादि सिद्धयः त्रिवर्ग कहिये अर्थ धर्म काम और ज्ञान जो है मुक्ति दायक ३७० कौन कहिये का है ३७१ ॥

दितिहि देखिकै कमलेक्षण भगवान । बोले अति आनँद बचन दुखदारक सुखदान ३७२ देव मातु सुनिये बचन जो चिंतसि बहुकाल । शत्रुन करि श्रीहरि गई सुतदुख देखि बिहाल ३७३ दुर्मद असुरन जीतिकै सकल जय श्रीपाइ । पुत्रन युत भोगा चहसि उर आनँद सरसाइ ३७४ इन्द्रज्येष्ठ निज सुतन करि हतविद्विषरण माहिं । तिन महिलान विलापको चाहत देखन काहिं ३७५ निज पुत्रनकी वृद्धि अति यश अरु श्रीय समेत । नाक पृष्ठ क्रीड़ित लखन चाहत मनहिं सहेत ३७६ तेऽसुरमा प्रायोऽधुना अपारणीया जानि । अनुकूलेश्वर विप्रसो गुप्तन विक्रम मानि ३७७ ताहूपर करिहौं कछू देवि उपाय बिचारि । तव ब्रतचर्या ताहि करि हौं प्रसन्न सुखकारि ३७८ नाहिं अन्यथा होतहै मम अर्चन सुख खाति । श्रद्धा के अनुरूप जो फल हेतुकते जानि ३७९ तुम करिकै पूजितजुमैं पुत्रन रक्षा हेत । सो उपेत्य पुत्रत्वको स्वांशेन सुखदेत ३८० उपधाव सुनिजपतिहि अब भद्रनिर्मल लेखि । हमहूंको ध्यावत रहबयाही रूप बिशेखि ३८१ + चौ० । यह कहिमै हरि अन्त र्द्धाना । अदिति महा आनँद मन माना ॥ दुर्लभ जन्मजनि हरिलेहै । ममदुख सकल दूरि करिदेहैं ३८२ भक्ति सहित सेवन पतिलागी । छल अभिमानालसमदत्यागी ॥ कश्यप लखो समाधि मझारा । निजमें आतम अंश निहारा ३८३ सोगुनि निज बीरज तप खानी । धारो अदिति मांझ सुख खानी ॥

कमलक्षण कमल नयन दारक नाशक ३७२ महिलान कहियेस्त्रीनका ३७५ नाकपृष्ठ स्वर्गलोक ३७६ हेमा कहिये हे देव माता ते कहियेतौन जो असुर हैं सो प्रायः कहिये बहुत करके अधुना कहिये या समये के बिषे अपारणीय कहिये अप्रमाण हैं काहे ते कि अनुकूल कहिये प्रसन्न है ईश्वर कहिये काल जिनका अथवा अनुकूल ईश्वर कहिये समर्थ बिप्र तिन करिके गुप्त कहिये रक्षित हैं ३७७ पुत्रत्व जो है पुत्र भाव ताको उपेत्य कहिये प्राप्त हो करके स्वांशेन कहिये अपने अंश करिकै ३८० उपधाव कहिये सेवा करो सु कहिये सुंदर जो पति है ताकी भद्र कहिये हे कल्याण रूपे ३८१ +

होइ समाहित मन मारीचा। दारुण्यग्नि यथानिल बीचा ३८४
आदिति गर्भ महँ गुनि भगवानहि। हंसबाह चढ़ि सुभग बि-
मानहि॥ अस्तुति करन लाग हरिकेरी। बारबार कर बिनय
बहोरी ३८५ जै उरुगाय उर क्रम स्वामी। नमोदेव ब्रह्मण्यसु-
नामी॥ भगवन्नमो त्रिगुणके हेता। पृश्णिगर्भ देवन सुखदेता
३८६ वेदगर्भ जै बेधस स्वामी। जै त्रिनाभ हरिअन्तरयामी॥
जै त्रिपृष्ठ शिपिविष्ट महाना। तुमहीं आदिमध्य अवसाना ३८७
दो०। कालरूप भगवान तुम जगताक्षि पति महान॥ जिमि
श्रोता गंभीर अति तृणादिकनको जान ३८८ इमि ब्रह्मा बिन
वत रहे ताही वै भगवान। अदिति जठर प्रगटत भये संत सुरन
सुखदान ३८९ चौ०। चारि भुजा सोहत सुखकारे। चक्रगदा
दर पद्महु धारे॥ पीताम्बर कमलेक्षण सोहत। आयत नयन
रूप मन मोहत ३९० श्याम स्वरूप झषाकृति कुण्डल। शोभा
अमित लसत मुख मण्डल॥ सुभग चिह्न श्रीवत्स सुहावा।
बलयांगद किरीट छबि पावा ३९१ कांची नूपुर चारु सुहाये।
बनमाला षडंघ्रि छबि पाये॥ कौस्तुभमणि सुकण्ठ छबिछाई।
भुवन.तिमिर सब दूरिबहाई ३९२ सलिलाशय प्रसन्न दश आ-
शा। प्रजा प्रहृष्टामोद प्रकाशा॥ ऋतव गुणान्वित आनँद
रासी। अंतरिक्षद्यो भूसुखबासी ३९३ अग्निजिह्व द्विजगऊ
नगादी। भेप्रसन्न परमारथबादी॥ भाद्रशुक्ल द्वादशी सुहाई।
श्रवणऋक्ष अतिही सुखदाई ३९४ सुभगमुहूर्त्ताभिजितसुहावा।
ताराऋक्ष सुमंगलगावा॥ मध्यदिवस सविता सुखछाये।
बिजया नाम मुहूरतगाये ३९५ ताहीसमय जन्महरि लीन्हा।
शंखध्वनि देवन् तब कीन्हा॥ दुंदुभि पणव मृदंगहु बाजे। आ-
नक चित्रवाद्य सुखसाजे ३९६ तूरघोष अतिही सुखदाई।
तुमुल शब्द गंभीर महाई॥ नृत्याप्सरस प्रीतियुतकरहीं। गायक
गावत अति मुदभरहीं ३९७ अस्तुति करत पितर मुनिदेवा।
बिद्याधर मनु शिखिसहदेवा॥ किन्नर सिद्ध किंपुरुष जाती।

चारण यक्षरक्ष सुखपांती ३९८ सुपर्ण भुजगोत्तम सबआये । गाइप्रशंसत यश सुखछाये ॥ नृत्यत बिबुधानुग सुखपाई । कश्यप आश्रम ऊपरआई ३९९ फूलनकी बरषा सबलाये । पुलकानंद महासुखपाये ॥ देखिआदिति संभव निजगर्भा । परमपुमांस मायथाभर्भा ४०० जैजैकार प्रजापति कीन्हा । अति बिस्मय मनमें धरि लीन्हा ॥ सहित भूषणायुध बपुजोई । धारोहरि बटु बामन सोई ४०१ सबके देखत बामनभयऊ । जैसेनट माया भ्रमकयऊ ॥ देखि महर्षि रूप रुचिराई । कीन्हकर्म कश्यप अगुआई ४०२ कीन्हो बिधियुत मखउपबीता । सावित्री दीन्ही तब सबिता ॥ ब्रह्मसूत्र सुरगुरु सुखभीना । तबहिं मेखला कश्यप दीना ४०३ कृष्णाजिन उरबी सुखछावा । सोमबनस्पति दंड सुहावा ॥ दियकौ पीनादिति सुखपाई । सुरमारग सुछत्र मुददाई ४०४ पद्मज दीन्ह कमंडलु लाई । बर्हिष सप्तऋषिन सुख पाई ॥ सरस्वती दीन्हो चखमाला । याबिधि कियउपवीत बिशाला ४०५ दियधनेश पात्रिका सुहाई । भिक्षाम्बिका उमासुख पाई ॥ इमि बटु बामन तेज बिराजा । सेवित सकल ब्रह्मऋषि राजा ४०६ याविधि तेजं हुताशनंएवा । करहिं सिद्ध ऋषि मुनि गणसेवा ॥ बलिकी यज्ञ जानिसुखदाई । बामन चले महासुख पाई ४०७ जाइ नर्मदा उत्तरकूला । देखी यज्ञ महासुखमूला ॥ करत भृगव उत्तमक्रतुजाहीं । देखत भे सब बामन काहीं ४०८ देखितेज तिनकेर अपारा । कहतभये सब बारहिंबारा ॥ आवत सूर्य बिभावसुवापी । संनत्कुमार वाथसुखब्यापी ४०९ या बिधि तर्क कीन्ह सबजबहीं । आइगये बटुबामन तबहीं ॥ दंडसछत्र कमंडलु लीन्हे । मारग यज्ञप्रवेशसुकीन्हे ४१० दो० । मौंज्यामेखलया सहित अजिनोत्तर उपवीत । जटिल बामनहिं बटुहिलखि भेसब तेजातीत ४११ सशिखि-साशिष्य भृगवभे ठाढ़े । सहिनहिं सके तेज अतिगाढ़े ॥ देखिरूप बलि अतिसुखपांवा । सुंदरशुभ आसन बैठावा ४१२ स्वागत पूंछिचरण पुनिधोये । जन्मजन्म

के पातकखोये ॥ चरणधोइ जल शीशचढ़ावा । जो शिव शंकर शिर नितगावा ४१३ स्वागत तव प्रणाम तव हेता। काहकरौं तव कृपा निकेता ॥ अति तपतेज बिराजत आपू। कहँ लगिबरणि कहौं परतापू ४१४ आजु पितृ भे तृप्तहमारे। पावित कुल भो दरशतुमारे॥ आजु स्विष्ट क्रतुभई हमारी। आये आपु इहांपगु धारी ४१५ जो बटु इच्छाहोइ तुमारे। सो अबमांगौ अग्रहमारे॥ भूकांचन गुणवत सुखधामा। अन्नपेय कन्यका ललामा ४१६ ग्रामसमृद्ध तुरंग सुहाये। रथवारण अर्हत्तम गाये॥ इमिसुनि बैरोचनि मुखबानी। धर्म युक्त सूनृत सहजानी ४१७ है प्रसन्न बोले भगवाना। जो तुम याबिधि बचन बखाना॥ सोकुल उचित धर्म यशाकारक। यस्यप्रमाण भृगव,सुख धारक ४१८ दो०। कृपण और निस्सत्व नर भयोन याकुल माहिं। बिप्रहि भाषै देनको देइ.बहुरिजो नाहिं ४१९ जाकुल में प्रगटत भयो हिरण्याक्ष बलवान ॥ हरिलैगो भूकष्टकरि मारो तिहि भगवान ४२० निज भ्राताको बध निरखि हिरण्य कश्यपजोइ। बधन भ्रातृहण को तबहिं गो बैकुंठहि सोइ ४२१ ताको आवत देखि कै शूलपाणि यमरूप। चिंताकरि मन बिष्णु तब मायाविनके भूप ४२२ जहां जहां मैंजाउँगो तहँ जैहै बलखानि। यह बिचारिताके हृदय प्रविशे शारंग पानि ४२३ सोबहोरि तहँ जाइ कै देखो शून्य स्थान। अति क्रोधित गरजो बहुरि कीन्हों नाद महान ४२४ छमाद्यो दिशि खंबिर सब गिरिस मुद्रअरु खंड। बिष्णुहि ढूंढ़त फिरत है महाबली बरिबंड ४२५ पितापुत्र प्रह्लाद तब द्विज वत्सल सुखदानि। बिप्र चिह्नालखि सुरनको दीन्हो आयुर्जानि ४२६ तासो मोको दीजिये त्रैपग पृथ्वी काहिं। और कछूनहिं चाहिये गुनियैभूप मनमाहिं ४२७ याबिधि सुनि बामन बचन बोले बलि सुखऐन। हमजानी तुम बुद्धि युत पै तुमरे बुधि हैन ४२८ हमहिं यांचिकै पुरुषपुनि यांचन योग्य न होइ।

तासों बृत्तिकरी पुहुमि मांगौ हमसों सोइ ४२९ याबिधि सुनि बलिके बचन बोले पुनि भगवान । जेती बिषयाप्रेष्ट जग अ-जितेंद्रियन सुजान ४३० नहिं समरथ पूरणकरन तेती सब नरनाहँ। असंतुष्ट त्रैपगनसों पूरन द्वीपहुताहँ ४३१चौ० । द्वीप पाइ इच्छा यह होई । सातद्वीप नव खण्डहु जोई ॥ ताकी राज मिलै मोकाहीं । इच्छाधारत इमिमनमाहीं ४३२ बैन्य गदादिक नृपति अपारा। तृष्णा काम अर्थ कीं धारा ॥ रहे मग्न पाये नहिंपारा । ताते हमयह बात बिचारा ४३३ ईश्वर प्रेरित जो मिलिजावै। संतोषी तामें सुखपावै ॥ असंतुष्ट त्रैलोकहि पावै। तबहूं तिहिसंतोष न आवै४३४ दो० । असंतोष कामार्थ हित पूरुषको दुखदेत । ईश्वर प्रेरित भोगजो सोई सुखकोहेत ४३५ जैसी इच्छाईशकी तिहि लाभहि संतुष्ट । ऐसे जेमहिसुरजगत सदातेजसोपुष्ट, ४३६ तासों दीजियतीनिपग भूमि न चाहि-यआन । सुनि जलभाजन लीन्ह बलि देन भूमिकेदान ४३७ चौ० । आयो करबामनके दाना। तबहीं कीन्हों रूपमहाना ॥ नाप्यो पुनि बढ़ाइ पद दोई । पुहुमी स्वर्गीदिशा सब जोई४३८ पदतृतीय को ठौर न पायो। तब बामन बलि काहँ बँधायो ॥ लज्जा पायो साहूकारा । नामदेव लखि बचन उचारा ४३९ अब निज पुण्यधरौ दल ऊपर। कीन्हींतुम जेती उरवी पर ॥ सुनि तब धारी साहूकारा। पत्र पालंराउठो न भारा ४४० तबहिं साह लज्जा अति पाई । नाम देव- सो कह शिर नाई ॥ जो कछु है सोई प्रभुलीजै। मोपर सदा कृपा पुनि कीजै ४४१ नामदेव बो-ले सुनि बानी । धन हम नाहिंचाहत अज्ञानी ॥ धन हरिभक्ति एक सुखदाई । सोई चाहत अपर न भाई ४४२ जिहि आधीन देव सबगाये। उभय लोक ऐश्वर्य सुहाये ॥ सुभि बिश्वास यु-क्त भोबानी। भगवद्भक्ति माहँ मनआनी ४४३ एक दिवस ए-कादशि दीना ।दुर्बल बिप्र रूप हरिकीना ॥ नामदेव के मंदिर आये । भोजन मांगत भे मनभाये ४४४ दीन्हो नहिं एकादशि

जानी। तब ब्राह्मण बोला वह बानी॥ भोजन शीघ्रदेहुयाबेरा। नाहिंत प्राण जात अब मेरा ४४५ लोगनहू यह कहा बुझाई। भोजन याको देहुकराई॥ नामदेवपर वाहि न दीन्हो। एकाद-शी जानि हठकीन्हो ४४६ सायंकाल विप्रमरि गयऊ। पुरमें अमित शोर पुनि भयऊ॥ हत्यानामदेव शिर आई। कहत भ-ये इमिलोग लुगाई ४४७ चिंता नामदेव नहिं धारा। प्रातस-मय यह कीन्ह बिचारा॥ चिता जलाइ विप्र शवलैकै। बैठे चि-ता जरन चित ज्वैकै ४४८ ताही समय हँसे भगवाना। गुनि तिन मन बिश्वास महाना॥ नामदेव बिश्वास बिचारी। पाये सकल लोगसुख भारी ४४९ परे सकल चरणन में आई। बार-बार बिनती बहु लाई॥ एक दिवसकी बात सुहाई॥ नाम देव मंदिर सुख दाई ४५० एकादशी दिवस लखिपाये। हेत जागरणकें सब आये॥ होनजागरण लागो जबहीं। लागी प्यास निशामहँ सबहीं ४५१ रहतप्रेतवा बलिहै जहँवां। कोऊ जाइ सको नहिंतहँवां॥ नामदेव सबकी गति जानी। गये कलश लै लावन पांनी ४५२ आधीराति गये चलिजहँवां। आयो प्रेत भयंकर तहँवां॥ नामदेवजी लखि सुखपाये। लैकर तालं सुपद यह गाये ४५३ आये मेरेलम्बकनाथा। धरती पाद स्वर्ग लगिमाथा॥ योजन भरिभरि हाथ सुहाये। याविधि नामदेव जबगाये ४५४ भूततरो तिन कृपा महाना। भूतहि सो प्रगटे भगवाना॥ दरशन नामदेव को दीन्हो। दै दरशन भवभय हरिलीन्हो ४५५ नामदेव गाथा सुख सारा। मैं बरणी निज मति अनुसारा॥

चन्द्रहास्य की कथा सुहाई। अबबरणौं रघुबर मन लाई ४५६ महा भागवत सोहरि भयऊ। बालापनसो हरिमन दयऊ॥ फैलो सुयश चद्रकी नाहीं। सप्तद्वीप पुहुमीसबमाहीं ४५७ जै मिनि अश्वमेध बिस्तारा।सोईबरणौंसुखकीधारा॥ केरलपति इक भूपसुजाना॥ सुकृतमूरति रतभगवाना ४५८ मूलऋक्षसुतजनु

बिधिदीन्हा। कुलुवासरमधि बसुहरिलीन्हा॥ बैरी चहुँदिशि चढ़ि रणधाये। भईसमर धरणी नृपआये ४५६ रानी तजे प्राण तिहिकाला। जरीसंगलै देहभुवाला॥ लूटो धाम ग्राम भंडारा। दासी लीन्ह बाल तिहिबारा ४६० गैपराइ कुंतलपुर सोई। रहै नगर जानै नहिं कोई॥ भिक्षामाँगि भूपसुतपाला। बर्ष तृतियभा चेरिहु काला ४६१ दो०। सोऽर्भकरहत्रै बर्षको सुन्दरगौरशरीर। उपलक्षित लक्षणनसो जारक्तकरघुबीर ४६२ चौ०। ठाढ़होहिं बोलैं मृदुबानी। सब हितकरहिं नारि नर प्रानी॥ बाम चरण षटअँगुलि बिराजैं। सुन्दरबदन मदन छबि छाजैं ४६३ कौकामिनि तन तेल लगाई। भूषण रुचिर देत पहिराई॥ भोजनदेइ अकेल निहारी। बाल बिलोकि दयाकरि भारी ४६४ पांच बर्षकर अंग सुहावा। गृहगृहजाहिं सबनमन भावा॥ बाल चरितलखि सब सुखपावैं। भांतिभांतिके लाड़ लडावैं ४६५ दो०। मंत्रिप्रवरकुंतल नृपति धृष्टबुद्धितिहिनाम। निवते मुनिगण एकदिन आये चलिते धाम ४६६ चौ०। खेलत खेलतगो तहँ बालक। मदन स्वरूप शत्रु कुलघालक॥ देखि मुनिन मन बिस्मय कीन्हा। बालकसह भोजन मन दीन्हा ४६७ भोजनकरि बैठेमुनि जबहीं। चन्दन सुगंधादि दिय तबहीं॥ बस्त्रालंकारादिक पाई। मंत्रिहि दिय अशीश मुनिराई ४६८ पुनि मंत्रिहि मुनि पूंछनलायो। यहसुतकस्य कहांते आयो॥ मंत्री बोला सुनि मुसुकाई। यहअनाथ बालक मुनिराई ४६९ कहो मुनिन मंत्री सुनिलीजै। अबयाको पालन तुम कीजै॥ निश्चयहोइराज्यधरएहा। तबबसुपालैनहिंसंदेहा ४७० यहकहि बिदाहोत मुनिभयऊ। मंत्री हिये शोच अति कयऊ॥ यहकाभाषिगये मुनिईशा। ह्वैहै तबसंपदा अधीशा ४७१ किमि बिपरीत करै यहबाला। हनिसुनिबचन करौंइहिकाला॥ लीन्हे अंत्यज बृन्द बुलाई। तिनसों कहतभयो समुझाई ४७२ देहु चिह्न बालक हतिआई। तुमहिंदेव महिषी सुखदाई॥ मन्त्री ब-

चन सुनत चण्डाला। हरषित चलतभये तिहि काला ४७३
बालसमीप गये चण्डाला। गेपराइ निज भवन न वाला॥
निज निज मारग बालक लागे। यह कहँ जाइरहो हठिआगे
४७४ खेलत हरिप्रतिमा लै हाथा। जानो डोमन बालअनाथा॥
लीन्हो बालक संग लवाई। रक्षा करन हाररघुराई ४७५ चला
जात संगबलिपशु जैसे। बिना बिष्णुराखै को कैसे॥ गयेसघ-
न बनकोउन जाना। त्राता कौन बिना भगवाना ४७६ लीन्हीं
खड्ग केशसो जबहीं। बोले रामराम मुख तबहीं॥ शालग्राम
शिला मुख डारा। करि अस्तुति हरिनाम पुकारा ४७७
छन्दचौपैया। जै जै जगनायक जन सुखदायक बासुदेव
दुखहारी। करसित करवाला लै चण्डाला मारन चहत खरारी॥
रक्षाप्रभु कीजै आनँद दीजै जिमि गजराज उबारे। मैं दीन
अनाथा पिता न माता तुमहीं बंधु हमारे ४७८ दो०। जो तुम
रक्षा नहिं करहु अपर बचावै कौन। पाहिब्यसन सो मोहिंअब
सर्बान्तर गुण भौन ४७९ चौ०। निज माया प्रेरीरघुराई। सबके
हृदय दया तब आईं॥ खड्गबहोरि कोशं में धारी। मोहे
अंग अनंग निहारी ४८० पाछे कीन्ह पाप हमभारी। तेपातक
अब हरहिं मुरारी॥ सबके मत ठहरी यह बाता। छांड़िय जीव-
न करिय निपाता ४८१ कछुक चीन्ह लै सचिवहि दीजै। जीव
त्यागि इहि भंगन कीजै॥ वाम चरण षट अँगुरी आहीं। लेहु
काटि इहितजिबन माहीं ४८२ सो लै काटि गये चण्डाला।
रघुपति मेटी बिपति बिशाला॥ चीन्ह दीन्ह चंडालन जबहीं।
भामन मुदित सचिव शठतबहीं ४८३ दो०। गये डोम निज
निज भवन मंत्रीमन उत्साह। वृथा कीन्ह मुनि बचन हमकौन
होइ नरनाह ४८४ चौ०। सुनहु सुजन यह कथा सुहाई। रक्ष-
पाल जिहि त्रिभुवनसाईं॥ ताकी छांह भ चापै काला। रंक
हि करै नाथ महिपाला ४८५ काटत अंगुलि भई बड़ि पीरा।
बहै रुधिर तननयनन नीरा॥ पीड़ित दुःख रुदन सो कयऊ।

मोहत जनु हरिणीगण भयऊ ४८६ छन्दचौपैया । देवेश कृ-
पाला दीनदयाला राखहु दुखसो स्वामी । ध्रुवदुःख विदारण
जन दुख टारन पाहि नमामिनमामी ॥ हरिणीगण आये अति
दुख छाये चाटत पद शिशु केरा। पक्षी दुखपाये पक्षन छाये
छाहँ करत तिहिबेरा ४८७ दो०। देशाध्यक्षकलिन्दतहँ प्राप्त
भयो तिहि काल।रक्षाहित तिहि देशकी बनगह्वरमें चाल ४८८
पुनि बालक देखत भये रोवत दुखित शरीर । हरिनामन को
जपतहै राम राम रघुबीर ४८९ सो० । त्राहि मोहिं भगवान
द्रौपदि राखी जिमि पुरा। बालक जानि अजान किमि देखत
माता रहित ४९० दो०। जो नहिं रक्षा करहुगे होइ अयश
तुम काहिं। यह प्रभु मैं प्रथमहि सुनी जन दुखपावत नाहिं
४९१ सुनि शिशु बचन कुलिन्दनृप बिस्मययुतभे तत्र। शांति
करत बालकभये गह्वरबनहै यत्र ४९२ चौ० । रुधिरधोइ रथपर
बैठावा। को तव तात मात कहँ आवा ॥ राम राम कह औरन
आना। इनकर मात पिता भगवाना ४९३ पुत्र हेत हम सुने
पुराना। तासु प्रभाव प्रगट हम जाना॥ संतति दीन्ह दयानिधि
मोहीं। बिन गोबिन्द न मोर सनेही ४९४ मेधाविनहि दीन्ह
सुत जाई। अति मनमुदित बजाइ बधाई॥ चन्दनवती नगर
नर नारी। भये सुखी सब सुवन निहारी ४९५ तब कुलिन्दबुध
बृंद बुलाये। याचकदान बिबिध बिधि पाये॥ नामकर्ण कर
कीन्ह बिचारा। बिप्रन ज्योतिष शोधिउचारा ४९६ चन्द्रहास्य
इनकर भल नामा। जितिहैं बहु भूपन संग्रामा॥ द्विजन
दानदै बिदा कराये। मन वांछित सु दक्षिणा पाये ४९७
दो०। बाढ़त दिन दिन इंदुजिमि शुक्लपक्ष भलपाइ। चंद्रहास्य
तिमिनित अधिक अधिकाधिकसरसाइ ४९८ चौ०। नितनव
मंगल मुदित उछाहा। ह्वैहैं चंद्रहास्य नरनाहा॥ सम्बत सप्तभये
सुतजबहीं। पढ़न हेत बोले गुरुतबहीं ४९९ अक्षर गुरूपढ़ावैं
ताही। हरिहरि तजिनहिं आनकहाहीं॥ रामनाम सुनि बिप्र

रिसाना। भणक केति कह बिप्र सुजाना ५०० चंद्रहास्य कहयुग
करजोरी। जिह्वा कहत ककानहिंमोरी ॥ हरिरिति द्वै अच्चर
सोंकामा। कामन अन्यशास्त्र सुखधामा ५०१ जिहि पुराण
हरिनाम न होई। मिथ्या बिधि बर्णित अपि सोई ॥ गद्गद
वचन कहाँविचारी। बहुरिरामहरिनामपुकारी ५०२ बालापन
जिन हरि मनलावा। सो बड़ पण्डित वेदनगावा ॥ हरिपद
प्रीति होइ नहिं जाके। निष्फल सकल वेद गुण ताके ५०३
रिसबस गुरु कुलिन्द पहँ आये। तब बालक नहिं पढ़तपढ़ाये॥
हरि हरि तजि मुखकहै न आना। सुततुम्हार सबविधिअज्ञाना
५०४ दो०। जाहु बिप्र गृहनृपतिकह हम न पुण्य कछु कीन्ह।
सुत बिहीन लखि कृपानिधि बिपिन परामम दीन्ह ५०५ चौ०।
गुरुगवने गृह अति सुखमानी। सुनहु संत अबकहौं बखानी ॥
सम्वत अष्टभयो सुतजबहीं। पुरजन बिप्रबुलाये.तबहीं ५०६ दै
ब्रतबंध वेदबिधि कीन्हा। मनबांछित दक्षिणा द्विजदीन्हा ॥
याचकसबै अयाचक भयऊ। दै अशीश निजनिज गृहगयऊ
५०७चन्द्रहास्य कछुबासरबीते। पढ़े वेद हरिनांम सप्रीते ॥ बिप्र-
नवेद पुराण सुनाये। चंद्रहास्यहरिभक्त सुहाये.५०८ हरिबासर
जब बासरआवा। करैबरत हरिहरि गुणगावा ॥ षोड़श सम्बत
पहुँचा आई। विद्या धनुष सिखे अधिकाई ५०९ भक्तिचाप
सात्विक गुणकरिकै। बधहरिलच्य चित्तशर धरिकै ॥ तूणशरीर
पंचशर धाये। लच्य जनार्द्दन महँ समाये ५१० रहैं रैनिदिन
हरिकी शरणा। करैं अहेर बिपुल धनुधरणा ॥ देश देश के
भूप प्रवीना। लै लै दण्ड छांड़ि सब दीना ५११ करि हरि
भक्ति सदा सुखदाई। हरिप्रताप विद्या सब पांई ॥ धनि धनि
चन्द्रहास्य अवनीशा। तजिहरि अपर ननावतशीशा ५१२ वि-
ष्णुभक्त कौ कथा सुहानी। सुनत सकल पातक की हानी ॥
बिन हरिकृपा न संगति संता। संतदरश कोटिन अघहंता ५१३
धुवहरिभक्त स्वर्ग ते बासी। लंक बिभीषण कोउ न जासी ॥

बलि पताल तहँ ज्ञातनकोई। जनप्रह्लाददरश किहिहोई ५१४
अब आगे बर्णहुँ इतिहासा । चंद्रहास्य जिमि भूपप्रकासा ॥
जाबिधि बिषयाभयो बिवाहू। भेजिहि बिधि कुन्तलपुरनाहू ५१५
चन्द्रहास्य हरिप्राण समाना। कह पितु जाव समर नृपनाना॥
कहकुलिन्द बैरी दिशिचारी। करहु न देश तासु पैठारी ५१६
तिन रिपु पीड़हिं देशहमारा। सुनि तव नाम न कर पैठारा॥
अतिदुर्जेय सैन्य युतभारी। किमिअकेल करिहौ रण रारी ५१७
पितावचन सुनि आँनद पाई। रथी पंचयुत कीन्ह चढ़ाई॥
भूपसहस्रन जीतत भयऊ। भाजि लुकाइ शत्रुबहु गयऊ ५१८
लैगज अश्व रत्न धन नाना। पुरी आपनी कीन्ह पयाना॥
धृष्ट बुद्धि जो मंत्रि नरेशा। शतग्रामकर दीन्हों देशा ५१९
पुरीचन्दनावतीम आये। मातु पिता पद शीश नवाये॥
भूप कुलिन्द लाइ उरलीन्हा। माता बहुरि आरती कीन्हा ५२०
दो०। नरनारी आनँद लहे चन्द्रहास्य मुख देखि। सानँद मित्रादिकन मिलि मन्दिर गये बिशेखि ५२१ द्विजवेदज्ञ बुलाइ कै पंचम तिथिनरराइ। चन्द्रहास्य अभिषेक किय निज पद आनँद पाइ ५२२ ध्वज पताक तोरण पुरछाये। भूपद्वार सजि सजि जनआये॥ चन्द्रहास्य कहँ पूजत पौरा। चन्दन कुंकुम लै करपूरा ५२३ पूजित चन्द्रहास्य असभाषा। पुरजन सुनहु जुमन अभिलाषा॥ आजुति प्राप्त याम्य दिनमाहीं। उत्सव चैक भक्तकर नाहीं ५२४ तथा विष्णु तिथि जो कर भोजन। शत्रु महान अहै मम सोजन॥ एकादशि तिथि जानि प्रकाशा। पातक सकल अन्न कृत बासा ५२५ ताते अन्नन भोजन लीजै। विष्णुभक्ति उरधरि व्रतकीजै॥ हरि दिन जे जागत निशिमाहीं। तिन के दास सदा हमआहीं ५२६ जलबुद्बुदवत आयुष एहा। अस्थि खंभ पल लेपित देहा॥ लोभ क्रोध अरि बिघ्न अपारा। यांबिधि यहशरीर दुखभारा ५२७ हरिवासर व्रत अति सुखसारा। सुनि पुरजन कियअंगी

कारा॥ दशमी तिथि आवै चलि जबहीं। उत्सवरचैं भुवनजन तबहीं ५२८ कनक ध्वजा सब धरहिं दुआरे। चन्दन कुंकुम अंग सँवारे॥ भोरहें निर्जल हरिबासर। केवल राम नाम कर आसर ५२९ प्रात दानदै भोजन करहीं। शालिग्राम पूजि सुखभरहीं॥ पुरशोभा कछु बरणिनजाई। देश देशकी संपति छाई ५३० सुबरणबस्त्र रत्न सुखदाई। देतदुर्बलनकहँनरराई॥ ब्राह्मण अलंकार युत कीन्हे। मंदिरशुभ तिनके रचिदीन्हे५३१ बिष्णालय शिवआलय नाना। बापी कूप तड़ाग बिधाना॥ योगेश्वर आश्रम सुख दाना। कीन्हो चन्द्रहासमखनाना५३२ प्रपाआदि बहुबिधि बनवाये। प्रजा देश देशनके आये॥ चन्द्र हास दीन्हे सुखबासा। प्रजा अष्टदश पुरी प्रकासा ५३३ परम पूरणप्रेमप्रकाशित जासो। भये प्रसन्न अधोक्षज तासो॥ सुवन कुलिन्द भक्त भगवाना। चन्दनवती पुरी सुखदाना ५३४ कह कुलिन्द सुत सुनु असिबाता। पुरि कुन्तल कुन्तल नृपभ्राता॥ निष्कायुत दीजै पठवाई। इतसोयोजन षट सुखदाई ५३५ धृष्ट बुद्धि मंत्री नरनायक। अपरराज महिषी सबलायक॥ गालव उपरोहित महिपाला। बुद्धिज्ञान गुण शील बिशाला ५३६ देहु द्रव्य सबकहँ पठवाई। पितुआयसु शिर लीन्ह चढ़ाई॥ रत्नभ-राइ शकट बहुतेरे। रथगजबाजिनु द्रव्य घनेरे ५३७ लिखो पत्र बहु द्रव्यपठावा। सेवक सुदृढ़ बेगि बुलवावा॥ पत्रदीन्ह धरि ताके हाथा। मंत्री सहित जहां नरनाथा ५३८ दो०। सो से-वकलै धनचलो मुदितदेह चितचैन। कुन्तलपुर पहुँचा निकट जहँ सरिता सुखदैन ५३९ चौ०। मज्जनकीन्ह हर्ष उरछावा। चन्दन द्वादश तिलक चढ़ावा॥ शालिग्राम पूजि बिधिनाना। बहुरिकीन्ह तिन नगरपयाना ५४० सुमिरि राम मंत्रीके द्वारे। ठाढ़ बिलोके बहुप्रतिहारे॥ बेत्रपाणि तब खबरि जनाई। धृष्ट बुद्धि तिहि लीन्ह बुलाई ५४१ आर्द्रबसन युत सेवक देखी। मंत्री बोलत भयो बिशेखी॥ कहु कुलिन्द पञ्चत्व सिधाये।

धरिकै आर्द्रवस्त्र जो आये ५४२ धृष्टबुद्धि तुम बुद्धि प्रवीना। अनुचित बोलहु बोलमलीना॥ भावनजाहि कुलिन्द विभूती। सोवश काल नीच करतूती ५४३ चन्द्रहास्य कुलिन्द कुल दीपा। जिनजीते बहुवीर महीपा॥ सो सवधन पठवा तुमपाहीं। लेहु मुदित मन हमगृहजाहीं ५४४ धन अनेक लखि सचिव बिचारा। बालक नाहिं कुलिन्द संचारा॥ सुनि बालक मन संशयकीन्हा। चतुर सुआर बोलि पुनि लीन्हा ५४५ तिनसों कहतभयो सुनिलीजै। भोजन देव अन्न इनदीजै॥ सादर तिन कहँ सूद बुलाये। तिन व्रत एकादशी बताये ५४६ हरिवासर व्रत विष्णु सुहावा। चन्दनवती देश सब छावा॥ प्रात समय भोजनकरिलेहैं। पुर मारग बहोरि चित देहैं ५४७ रजनी रहा सेवकन संग। प्रातहि कीन्ह प्रकाशपतंगा॥ कोरुअन्नलै किय जिवनारा। सुनत सचिवभा क्रोध अपारा ५४८ सो०। पत्री उतर लिखाइ लै सेवकके करधरो। बढ़ी कुमति अधिकाइ भयो शोचवश कुटिलशठ ५४९ चौ०। हृदय आन मुख आनहिं बोला। पुत्रबुलाइ कुमति मनडोला॥ कह तुमराज काज करु जाई। कहव सँदेश नरेश बुझाई ५५० बिषया कन्या बर के हेता। गये आजु पितु त्यागि निकेता॥ असकहि आतुर चला अभागी। सुलगै उर आवाजिमि आगी ५५१ द्वैवासर बीततहँ आवा। चंदनवती सुवास सुहावा। देखि कुलिन्द मिले उठि धाई। बालकसहित गेह पदआई ५५२ पूंछत भो मंत्री कुशलाई। बोलतभे कुलिन्द शिरनाई॥ नाथ कुशल सब पुण्य तुमारे। दीन दरश बड़भागहमारे ५५३ पुरजन सकल मिले पुनिआई। बैठीसन्तन सुमतिअथाई॥ समयपाइ मंत्रीमृदुबैना। कहत कुटिल अघ अवगुण ऐना ५५४ कब इहि बालक भाअवतारा। कहौ कुलिन्द सकल ब्योहारा॥ कहकुलिन्द औरसनहिं एहा। आपुहि मिलो भक्ति गुण गेहा ५५५ एकसमय आखेर सिधाये। कौंतल पुर योजन द्वै आये॥ बामचरण षट

अंगुलि हीना। देखो बालक दुःख मलीना ५५६ पांचवर्ष कर बालक एहा। लायों रथचढ़ाइ निज गेहा॥ तुमरी कृपा मिलो सुतआई। कीजो मोपर सदा सहाई ५५७ चन्द्रहास्य कह विप्रन नामा। कृपारावरी दीन्हो रामा॥ कह मंत्री बड़भाग तुमारा। मिला पुत्र अस सुन्दर बारा ५५८ कहत मूढ़ करि युक्तिबनावा। इनकायशहमरे पुरछावा॥ चलतहिं मदनकहा असभाषी। देखन चन्द्रहास्य अभिलाषी ५५९ पठवहु कुन्तल पुरथेजाहीं। तबलगि हम रहिहैं तुमपाहीं॥ कह कुलिन्द जो आयसु होई। युतपरिवार करैं हमसोई ५६० शोच विवश मंत्री पछिताना॥ चाण्डालने कर छलबल जांना। वाम चरणषट अंगुलि आनी॥ झूठी शठनदीन्ह सहिदानी ५६१ सुनिके वचनहोन चहसांचा। अजहुँहतौं करि वचनअसांचा॥ जो भूषणआहे बृषकेतू। सोइहि देउँ गरल करिहेतू ५६२ कुटिल कुचाली मन असि आनी। लागो लिखन पत्र निजपानी॥ श्रीसुत मदनभरोस तुमारा। चन्द्रहास्य है जग उजियारा ५६३ पूछौजाति न पांतिकुलीना॥ कहैंकोउ किन विप्रप्रवीना॥ श्रौर न कछु आंनो सन्देहू। दीजौविषनलेहु मत केहू ५६४ लिखि अस पत्र बाँचि पुनिदेखा। कीन्ह मुद्रिका सुदृढ़ विशेखा॥ जोकौ मारग बांचैजाई। ताको हरिहरसप्तदिवाई ५६५ चन्द्रहास्य निज माथे राखा। पुनिकरजोरि वचन असभाखा॥ अहै पितामम शरणतुमारी। असनहोइ जिहिहोइ दुखारी ५६६ मृदुवाणी कहिताहि प्रबोधा। संत गनत नहिं अधम बिरोधा॥ प्रभुता ऊंच नीच जड़ करनी.॥ सचिव कपट उरभरी कतरनी ५६७ जो हरिभक्त ताहिको मारा। त्राता निशिदिन रामुवदारा॥ महापुरुष नहिं अनहित जाना। शत्रु मित्र द्वौ सम करिमाना ५६८ चन्द्रहास्य मन्दिर चलिआये। जनक जननि पद शीश नवाये॥ मेधा विनि पुनि दीन्ह अशीशा। राखहिं शरण सदागौरीशा ५६९ अक्षत दधिदुर्वाहि

मिलाई। कीन्हो तिलक प्रसूहरषाई॥ नारायण सुख रक्षाकरहीं। मारग माहिंसदा मुद भरहीं ५७० बाहूपातु जनार्दन देवा। हृषीकेश वक्षस्स्थलएवा॥ माधव पातु उदरके माहीं। पद्मनाभनाभीहिं सदाहीं ५७१ पातु नृसिंह कुक्षि सुखदाना। कटिमें कमल नयन भगवाना॥ मधुसूदन द्वौ जांघन काहीं। यज्ञभोक्त जानुनि द्वैमाहीं ५७२ दामोदर गुल्फन में सोई। पातु युगांघ्रि सहसपदजोई॥ सहस्राक्ष अक्षिणिके त्राता। पातुत्रिविक्रमसुत तवगाता ५७३ तुम सम पत्नी मिलै सुहाई। पाइ अशीश चले शिरनाई॥ सेवक चारि संगनिज लीन्हे। चढ़िकै अश्व गमन तिन कीन्हे ५७४ बाहर ग्रामजबहिं चलि आये। कुंकुमरंजित तियलखिपाये॥ गृष्टि नवीन वत्ससहदेखा। पुष्प मुकुट कोबांधविशेखा ५७५ चंपक मालकोउ लैदयऊ। वरनबीन समशोभित भयऊ॥ बनाध्यक्ष बहुरो सुखपाई। दाड़िम फल दीन्हों लै आई ५७६ चन्द्रहास्य सुमिरत भगवाना। जात चले नांघत बननाना। लोमानकुल दरशपुनिपावा॥ मृगाबामते दाहिन आवा ५७७ छेमकरी कहछेम सदाई। तित्तुरबोल बामादिशि धाई॥ भयेशंकुन सबजे जगजाने। चन्द्रहास्य निरखतहरषाने ५७८ वासदोसरे गतयुगयामा। पहुंचे निकटग्राम सुख धामा॥ बागतड़ाग रुचिर अति शोभा। जिहि विलोकि सुरनर मन लोभा ५७९ कुंजहिं चंचरीक तिहिताला। बोलहिं बोल विहंग रसाला॥ पुरयनिं सघनकंज शुचिनीके। हंससमूह विराजतहीके ५८० बांधे चहुंदिशिरुचिरकरारा। नीरगंभीर न पाइयपारा॥ मधुऋतु सदारहे तहँछाई। मानहुँ मन्मथअनी सुहाई ५८१ रहें सदाजलचर सुखमानी। सूखै कबहुँन सरवर पानी॥ शंकर मठ शुचि सुन्दर सोहै। उपमा बरणि सकैअस कोहै ५८२ जहां विराजत शंभु भवानी। जिह्वालाल किमि सकै बखानी॥ चन्द्रहास्य शुचि नीर अन्हाये। द्वादश तिलक सुगंध चढ़ाये ५८३ पूजि सकल बिधि शालिग्रामा। कीन्हो

बटछाया बिश्रामा॥ पंथ श्रमित अति सोवनलागे । बरणौं अपर भयो जसआगे ५८४ तिहि अवसर बिषयातहँ आई । सहित सखिन मनमुदित अन्हाई॥ चम्पकमाली राजकुमारी॥ आई संग एक शत नारी ५८५ यौवन सार्द्ध त्रयोदशबरषा। कौसुम्बाम्बर धरे सहरषा॥ चूचुक बिल्व फलाभ सुहाये। चंच लांगालंकृत गाये ५८६ दो० । मुक्ता हारा दिकनसों मंडित मारगजात । नूपुररव नाचत सबै गावत हरषित गात ५८७ चौ० । क्रीड़ाबन पहुँचीं इमि जाई। कोकिलादि बोलत सुखदाई॥ एक सखी सबसों अलगाई । पुष्प समूह लखन हित धाई ५८८ तिहिलखि कहभययुत इककन्या । एकाकिनी जाहि मति धन्या॥ हेहस्तिनि समुक्त कुच कुंभा । नरकेशरि दलि करै अचंभा ५८९ याविधि हँसत पुष्प बहु लैकै। बिरचि मालपहिरे मुदकैकै॥ सहित पुष्प दाड़िमफलदेखी। चंपक मालिनि कहो बिशेखी ५९० देखहु बिषया अद्भुत बाता । प्रथम पुष्प पीछे फलजाता॥ बिल्व फलस्तनि त्वयि बिपरीता। कैसे भयोकहोसोगीता ५९१ बिषयाकहो भूपजापाहीं। धर्म बनस्पतिके ये आहीं॥ लैपुष्पन शिरं ऊपर थांपी । चंपक मालिनि निद्रा ब्यापी ५९२ बिषया कहो पुष्प शिरधारी। जानि सोवहु बनमें सुकुमारी॥ कोउ कुण्डली भोगी देखी। गहै आइ तव निकट बिशेखी ५९३ सुनि इमिराज कुँवरि गुण ऐना। कहत भई बिषया सों बैना॥ तवमुख शोभा चन्द्र लजाये । उरजाकृति मन्मथ छबिपाये ५९४ इनलिङ्गन सोंमांगियएहा॥पूजनहार मिलै युतनेहा॥ दलानाल सपूजक जोई। प्राणहु दै कीजिय बशसोई ५९५ सुनि बिहँसी बिषया मनमाहीं। प्रविशीं सकल बहुरिजलमाहीं॥ कुचमण्डल तकि फूल चलावैं। फूलनकी बरषा बरषावैं ५९६ गावहिं कोमल नाद नवीना। सकल चन्द द्युति बुद्धि प्रवीना॥ जलक्रीड़ा खेलहिं इकसंगा। मनहुँचमूचतुरंग अनंगा ५९७ तब बिषया सब सखिन बिहाई। लेन फूल

दलगै फुलवाई ॥ देखि बिटप बट निकट तुरंगा । सोवत मूर-
ति मनहुँ अनंगा ५९८ दो० । भई मोहबश पुरुष लखि नारि
चतुर सुजान। तिन समीप पहुंचत भई कामिनि कोउन जान
५९९ चौपाई । जातहि देखि स्वरूप भुलानी । यात्रिभि मनमें
कहावखानी ॥ करौं प्रणाम जोरियुग हाथा । यहबर मोहिंमिलै
रघुनाथा ६०० बाम अंगतब फरकन लागा । जान्यो मोरभयो
बड़भागा ॥ सुन्दर चंद्रबिम्ब जनुरेखा । माथे मुकुट पत्र इक
देखा॥छोरि मुद्रिका मन सकुचाई । अच्चर निज पितु चीन्ह
बनाई ॥ श्रीसुत मदन सुमति बुधिधीरा । चन्द्रहास्य सुंदर
बरबीरा ६०१ जानि पूंछत्र कुल धर्माऽचारा । जाति न पांति
न रूप निहारा ॥ जातहि तुम दीजो बिष एही । बरजें कोकिन
परम सनेही ६०२ बिष अच्चर बांचत मन शोची । मोरेतात कि
बुधि अति पोची ॥ सुंदर अंग अनंग समाना । लिखादेनबिष
कौने ज्ञाना ६०३ शिव गौरी मन क्रम अनुराधे । पायौंना
हबरत तप साधे ॥ बिषयाहि बुद्धि अवतिहिवारी । चखक-
ज्जल नख लीन्ह उतारी ६०४ दीन बिषाग्र यकार बनाई ।
पुनि तहँ तैसिमुद्रिका लाई । तैसै पत्र मुकुट धरिदीन्हा ॥ निर
यासाम्र बहुरि दृढ़ कीन्हा ६०५ लोभा मन नहिंइत उतजाई ।
असमन बांछित निज पति पाई ॥ परवश चलिआई पुनि ता
हां। चम्पक मालिनि आलिनमाहां ६०६ दो० । भगवतजन
सादर सुनहु जिहिहरि होहिंदयाल । होहिंताहिबिष सुधासम-
सीमनचापैकाल ६०७ चौपाई ॥ जाके नहिंपद त्राणनसाजू।
तिहि गजराज देत रघुराजू । बिषाहिदेखि बिषयाहरि दीन्ही।
तिहि चरित्र पावैको चीन्ही ६०८ देनहलाहू लपठत्र कु-
चाली॥मिली मरालहिमनहुँ मराली ॥ होइभक्तहरि मनक्रमबा
नी॥जरै कृशानुनबूडै पानी६०९बिषया पाहँसखिनमिलिभाखा।
येतीदेरकहांमन राखा ॥तजिनृासिंह सोवतकहँ आई । फिरिफि
रिचितवत चित्त लगाई ६१० याविधि करतहास्य परचारा।

निज निज भवन कीन्ह पैठारा ॥ चन्द्रहास्य हरिभक्त सुजाना ।
जागे मन सुमिरत भगवाना ६११ मुख पखालि सुमिरि हरि
नामा ॥ आये चलि कुन्तलपुरग्रामा ॥ उतरेद्वार सचिवकेआई ।
द्वार पाल सों खबरिजनाई ६१२ सुनिकै द्वारपाल चलिगयऊ ।
द्वारदोसरे भाषत भयऊ ॥ चन्द्रहास्य द्वारे चलि आये । मदन
हिमिलन चहत सुख छाये ६१३ द्वितिय तृतियसो भाषोजाई ।
तृतियचतुर्थहि कहाबुझाई ॥ चौथो पंचमसों कहिदीन्हा । छठयें
पाहँ कहनसो लीन्हा ६१४ छठयों गोससमके पासा । सब
वृत्तांत कीन्ह परकासा ॥ चन्द्रहास्य हरिभक्त सुहाये । तब
पितुलैपत्री चलिआये६१५मदनसिंहासन बैठेजाहीं । करहुखबरि
तिहि मन्दिरमाहीं ॥ नामविवेक एकप्रतिहारा। आतुरगयो सघन
दरबारा६१६बेतपाणि जोरेयुगपाणी । शीशनवाइ कहतमृदुवा-
णी॥नाथकुँवर इकद्वारेठाढ़ा । बिष्णुभक्त सुन्दरछबिगाढ़ा ५१७
धृष्टबुद्धि पठयो तुमपाहीं ॥ देखा सुना रूपअसनाहीं । सचिव
कुमार सुनतचलि आये ॥ सभालोग सबसंगासिधाये ६१८ नि-
रखत रूपसभा सुख पावा । मदनहिये उर आँनंद छावा ॥ भेंटे
चन्द्रहास्य उरलाई । रंकभवन नवनिधिजनुआई ६१६ पुरबा-
सी मिलिकहत सप्रीती । जनु इन बदन मदन छबिजीती ॥ म-
दन मदन द्युतिबदन निहारा । गेलै सदन कुलिन्द कुमारा ६२०
कौ पूंछत कुलिन्द कुशलाई । दर्शन हेत मिले जनुआई ॥ कर
धरि चले मदन बरबीरा । सिंहासन बैठे इकतीरा ६२१ बोले
बिहँसि मदन सुनुनाथा । तुम दर्शन हमभये सनाथा ॥ वहां
गयेहैं जनक हमारे । समाचार तुम तिनहिं निहारे॥६२२ तुमरे
पिताहमहिं बहुचाहा । कीन्ह कृपाबहु प्रेम निबाहा ॥ तिनइक
पत्र लिखा निजपानी । दीन्हा हमहिं हेतु बड़जानी ६२३ बांचन
पत्रैकांतमभाषा । लीन्ह सचिव सुत माखेराखा ॥ छोरिमुद्रिका
नैननराखी । बांचत सभा मांझ बुधसाखी ६२४ श्रीसुत मदन
सदन गुणगूढ़ा । चन्द्रहास्य हरिभक्त अगूढ़ा ॥ पूँछहु जातिन

पांति सनेहू। रूपशील गुण कछु न लखेहू ६२५ गुरुजन पुर जन मतजानिलेहू। बचन मानि बिषया इनदेहू॥ मदन मुदित भेसभा समेता। बरणि न जात मोदमनजेता ६२६ बिषयाचढ़ी धौंरहरजाई। गिरिजा की अस्तुति मनलाई॥ हेजगदम्ब अनुग्रह कीजै। मनबांछित बरमोकहँदीजै ६२७ दो०। देवन सबन मनाइ करि बिनय करत करजोरि। मदन बाण भेदेहृदय मदन कदन गतितोरि ६२८ चौ०॥ चीन्हे अच्छर निजपितु पानी। पाई मदन पुष्ट सहिदानी॥ राजकाज तजिगे इहिहेता। सो अब भेसहाइ वृषकेता ६२९ सचिव सुवनमहि सुरन बुलाये। सादर शुभगासनबैठाये॥ लग्नशोधिदीजै तत्काला। शोधि द्विघटिका बेद बिशाला ६३० शोधि लग्न बुध कहाबखानी। गोधूली याच्छण शुभ दानी॥ सुनि हर्षित भो सकल समाजा। दीन्ही बस्तु बिवाहन काजा ६३१ बाजनबाजे अति उत्साहा। चंद्रहास्य निशि आजु बिवाहा॥ मण्डफ सुन्दर शोभ अपारा। जनु बिरंचि निज हाथ सवाँरा ६३२ बिषया चन्द्रहास्य अन्हवाये। पटपंहिराइ बेदिका लाये॥ बिप्रस्वांस्तवचकहिबे लीन्हा। लै मधु पर्क मदन पुनि दीन्हा ६३३ छन्द राम गीतिका। चन्द्रहासहिभये पूछत मदन आँनद पाइ। नाम पितु पितु तत्पिताकर बदस गोत्र सुनाइ॥ पितु पितामह तत्पिता हरि चन्द्रहास्यबखान। बिन कुलिन्द मदीय गुरु के हैन रक्षक आन ६३४ दो०। इमि अनन्य भावहिं निरखि कहे मदन येबैन। हो प्रसन्न या दानसों लक्ष्मीपति गुणऐन ६३५ चौ०॥ कीन्ह बेद कुल रीति बहोरी। ग्रंथि जोरि पुनि भामरि फेरी॥ मदन कीन्ह जिमि कन्यादाना। सो न जात कबि पाहँ बखाना ६३६ दाइज दीन्ह रतन भण्डारा। रथगज धेनु तुरंग अपारा॥ द्विजन दान दीन्हे मनमाने। याचक सकल दान सनमाने ६३७ दो०। रत्न पटम्बर को गनै अरुमुक्तन की माल। दाइज दीन्ह अनेक विधि याचक किये निहाल६३८ चौ०॥ बाजहिं

बाजन विविध प्रकारा । गावहिं सुन्दरि मंगलचारा । दीन्हे
चंद्रहास्य बहुदाना । बुध जन याचक करि सन्माना ६३९
नारिन नौछावरि बहु दीन्हा । रँग रँग पाट पटम्बर चीन्हा ॥
दीन्ह दान कछु बरणिन जाई । सुखी भये सब लोग लुगाई
६४० हरिजन चंन्द्रहास्य उठि सोहे । पुरनरनारि बिलोकत
मोहे ॥ भक्त सत्य जो रामकृपाला । ताकीसीम न चापै काला
६४१ मंत्री मत बिषदेने कीन्हा । रामताहि बिषया तियदीन्हा॥
कथा भक्तहरि सुनै सुनावै । अभिमत बरबिन जपतप पावै ६४२
ऐसे जनपालक रघुनायक । अल्पकाल तिहिंमे सुखदायक ॥
नारायण को भक्त पियारा । निशिदिन होइ संत रखवारा ६४३
दो० । सुत कुलिन्द मंत्री सुता भाइहि भांति बिवाह । तीनि
तापजाइन सकत रामभक्तके पाँह ६४४ चौ० ॥ मंत्री वहां कीन्ह
अपकारा । बांधि कुलिन्द लीन्ह भण्डारा ॥ लीन्हों दण्ड स-
कल पुरबासिन । बोरिबारि दहि अनल किरासिन ६४५ लैलै
दण्ड छांड़ि सब दीन्हे । बहुरि बचन कहिबे इमि लीन्हे ॥ सुनु
कुलिन्द शठ कटिहौं माथा । तुमपठवाधन सेवक हाथा ६४६
खल निज पुत्र बिलोकि भुलाना । भावइ गर्ब सर्बहम जाना ॥
बहुत द्रब्य शठ बृथा बहाये । जहँ तहँ कूपतड़ाग खनाये ६४७
बालापनसो हमनहिं देखा । हरि मन्दिर शिव भवन बिशेखा ॥
बापी प्रपा बिप्र गृहनाना । कबहुँ पुराणसुनो नहिं काना ६४८
सो इत होत भवन प्रति माहीं । मोकहँ सकल समाज लखा-
हीं ॥ वे शिल्पी कहँ गयो सिधाई । निखिलमदीय बित्त जिन
खाई ६४९ अबकहु तुवबालक है कांहां । डारैं मारिसुनों जहँ
ताहां ॥ छोरि, कुलिन्द बहुरिसोदयऊ । याबिधिभय दिखरावत
भयऊ ६५० द्रब्यसर्ब पुर लै बरजोरी । छोड़े लैलै दण्ड बहोरी ॥
पुरबासिन कह हमतुम शरणा । आयसु होइ सबहिं सो करणा
६५१ करि आपन सब नगर बसावा । द्रब्यसर्ब लै भवन सि-
धावा ॥ मंत्री मूढ़ पंथ जिहि जाही । काग कुचालि शीश मड़-

गही ६५२ फणिक एक आकाशमजाहीं। धरिनररूपकहततिहि-
पाहीं ॥ तवसुबरण घटत्रासहमारा। तारक्षासुत करततुमारा६५३
दो०। नाशितभो मम धाम वह ताते हैं अब जात। करिय
विषाद न पूर्ण अब स्वस्तिहोइ तवगात ६५४ चौ०। असकहि
ब्याल पताल सिधावा। मंत्री मन संशय बड़ आवा ॥ नगर
सौंह बाजन सुनि पावा। भासंशय मन शोच जनावा ६५५
दो०। संशय बस अशकुन निरखि मनमोकरै बिचार। जिया-
लाल कहि किमि मिटै जो बिधि लिखा लिलार ६५६ चौ० ॥
उर भयभीत नगर नियराना। बाजन बाजहिं हने निशाना ॥
मागध सूत बंदिजन धाये। बर्णत बिरदावलि चलिआये ६५७
पहिरे पट पाटम्बर नाना। करहिं सकल सुत सचिव बखाना ॥
धनि धनि चन्द्रहास्य कुल चन्दा। यहि विवाह परिवार अन-
न्दा ६५८ धन्य धन्य विषयाकर भागा। लहबर चन्द्रहास्य
सुख पागा ॥ अस सुनि सचिव क्रोध उर छावा। अमित विप्र
मानहु मधु खावा ॥ ६५९ आयेयाचक पुरजन लोगा। दण्ड
प्रहार करै उर शोगा ॥ क्रोधवंत लखि सकल पराने। मंत्री
महल आइ नियराने ६६० गावहिं गजगामिनि गण पांती।
सो शर सम लागै शठ छाती ॥ सुनि ध्वनि मंगल धुनि धुनि
माथा। दहै दाहउर मींजै हाथा ६६१ क्रोधवंत बैठा सो आई।
रिस बस कोउ समीप नजाई ॥ मनमों कहै मदन मति मूढ़ा।
यहु कस कारज कीन्ह अगूढ़ा ६६२ दो०। सुत कुलिन्दमंत्री
सुता जोरिग्रंथि चलि आव। पितु सम तिहि अवलोकि करि
चन्द्रहास्य शिर नाव ६६३ चौ० ॥ रिस बस शठ न कहै कछु
बाता। काह कीन्ह करतार बिधाता ॥ आइ मदन चरणनशिर
नावा। क्रोधवंत निरखत भय पावा ६६४ कहै पुत्र कीन्हो कस
काजा। जो तुम पत्र लिखा सो साजा ॥ कह रिस बस जनि
मुख दिखराऊ। लिखा पत्र मम कर सो लाऊ ६६५ पत्र पुत्र
दीन्हो स्वै आनी। मनही मन बांचै अज्ञानी ॥ जहां नाम विष

विषया चीन्हा। हे विधि किन यकार लिखि दीन्हा ६६६ सो पढ़ि बहुरिरहा चुपसाधी। और करौं कछु बेगिउपाधी ॥ धीरज सुत को देइ बहोरी। कह अब करौं रीति कुल मोरी ६६७ हमरे कुल यह रीति बिवाहा। होइ तबहिं मन मुदित उछाहा ॥ जब चौथे दिन देविहि जाई। पूजै साज समाज बनाई ६६८ है देवी मठ कानन मांझा। पूजत संत सबेरे सांझा ॥ सुनहु संत हरिभक्त जुसांचा। ताहिलगै त्रयतापनआंचा ॥ ६६९ संतन अनहित करत अभागे। आवत तासु बंश के आगे ॥ जो जो कूप खनत परकाहीं। गिरत मूढ़ सोआपुहि ताहीं ६७० दो०। मंत्रि कुमति कुटिलाधम कीन्ह कुमंत्र विचार। जियालाल जो दास हरि तिहि को मारनहार ६७१ निशि दिन त्राता भक्त हरि शठ सचिवहिं ना सूझ। विष देते विषया दई तबहुँ न बूझ अबूझ ६७२ चौ० ॥ मंत्री कुमति कुबुद्धि बिचारा। चहत उड़ावन फूंकि पहारा ॥ विषया किन बिधवा है जाई। मारौं हठि शठ झूंठि सगाई ६७३ चन्द्रहास्य बुलाइ बैठारे। मृदुल बचन करि युक्ति उचारे ॥ हमरे कुल यहरीति सदाई। बनदेवी मठ पूजन जाई ६७४ बिन पूंजे सुख लहै नकोई। ताते अवशि पूजिये सोई ॥ कहो सचिव करि कपट सयानी। चन्द्रहास्य शिर ऊपर आनी ६७५ सरल स्वभाव भक्त भगवाना। छलबल कपट कतहुँ नहिं जाना ॥ चन्द्रहास्य पठये पुनि धामा। बैठेआपु अकेलसकामा ६७६चण्डालनकहँ बोलिबहोरी। लीन्ह खड्ग करि बुधि मति भोरी ॥ छांड़ो बालक प्रथम न मारा। वृथा कीन्ह शठ बचनहमारा ६७७ नीचपोच दीन्होममधोखा। करहुजाइ अब कारजचोखा ॥ वनदेवीमठ पूजनआवै। सोजीवत आधै जनिपावै ६७८ नतुतव बाल वृद्ध परिवारा ॥ मैंले भार करौंदहिछारा। नाथ करब अब बिनाविचारे ॥ जाइ विपिन मठ निकट हमारे ६७९ असकहि विदा कीन्ह चण्डारा। तिन निज आश्रम शस्त्र संभारा ॥ बैठेमठदेवी संभारी। सुनहु

संतजन चरित मुरारी ६८० कुन्तल भूप मंत्रअस ठाना॥ कब-
हुँ न नाम जपो भगवाना। मुनिगालव तुम कहौ बुझाई॥
राजिकोष गजरथ ठकुराई ६८१ ये सब जानहु तरुवरछाया।
रामनाम बिन जन्मसिराया॥ सातहुद्वीपप्रियव्रतत्यागी। गेबन
रामहेतबड़भागी ६८२ रामहेत नृप भरतसुजाना। दीन्हीत्यागि
राजिसुखदाना॥सम्बत बहुतकीन्हतपभारी। ध्यानालय हरिरूप
निहारी ६८३ संगकुरंगकेर तिनकीन्हा। तासुप्रभाव हरिणतनु
लीन्हा॥ ताहू तनहरि भजन न भूला॥ रहीपरंतु संगकी शूला
६८४ जन्म तीसरे त्यागा सोऊ। भेनिस्संग जान सब कोऊ॥
ऋषभ देव हरिनाम सँभारा। स्वप्न समान लखो संसारा ६८५
नृपतिययाति भोग बहुकीन्हा। युवा अवस्थालघु सुतलीन्हा॥
कछुक दिवस महँ लज्जा पाई॥ गेवन राम नाम चित लाई
६८६ ऐल नृपति अति विषय भुलाना। संग उर्वशी ठगोम-
हाना॥ कछुदिन माँझ उर्वशीजोई। दीन्हो त्यागि नृपतिकहँ
सोई ६८७ तासुविरह अतिभये दुखारी। जियालाल किमिसकै
पुकारी॥ घूमत महा दुखित दुखपाये। हाउर्वशी रटनि रटलाये
६८८ तासु बचन गंधर्व न ध्याये॥ कछुदिन महँतिहिलोकसि-
धाये। तहां भोग बहु सम्बत कीन्हा॥ भईगलानि सकल तजि
दीन्हा ६८९ बहुरि रामचरणन मनलाये। जिनकी कृपा शां-
ति पदपाये॥ वानरेश निशिचर पति राजा। राम शरण गहि
साजे काजा ६९० दो०। रामचरणकी रजपरसि तरीअहल्या
नारि। ताते गालवहम भजब रामनामसुख कारि ६९१ चौ०।
अब मोरे मन ऐसी आई। चौथेपनबन शरणगुसाँई॥ बिन
प्रभुभवसागर को तारै। कोयम मारन दुःख उबारै ६९२ दो०॥
गालव मुनि सुनि पुनि कहत कीन्ही नीकि बिचार। चौथेपन
जाइय विपिन जपत महेशभुवार ६९३ चौ०॥ सुनुनरेश असि
नीति विचारा। तनधन माया को परिवारा॥ चौथे पनके लक्ष-
णयेहू। सोनरेश सुनुसहित सनेहू ६९४ जिहि ध्रुव अचल न

देइ दिखाई। सोम छाह क्षिति नाहिं लखाई ॥ जीवै एकसमा
नर सोई। जासु प्रकाश नयन असहोई ६९५ इतउत चितवन
देख प्रकाशा ।एक वर्ष जीवन तिहि आशा ॥ किरणि
बिम्ब रवि लखि न पराई। एक वर्षसो जीवै राई ६९६ विन घन
दामिनि दक्षिण ओरा ॥ दमकै सो अति घोर कठोरा । सो
आश्चर्यहोत सुनु राजा। जीवन हायन एक समाजा ६९७
तैलसर्पि दर्पण परछाहीं। देखै धुँधुरा जीवैनाहीं ॥ जिहिन ब-
साइ नासिकाबासू। शून्य अंग तिहिकाल निवासू ६९८ करै
जोनर अस्मान सदाई। भालनेत्र जल प्रथम सुखाई ॥ पीवत
जल जिनकण्ठ सुखाना। दिनदश जीवन ताकर जाना ६९९
ये सब कालपरीक्षासाजा। औरौ भेदकहौं सुनुराजा ॥ सम्पुट
श्रवण शब्द नहिंआवै। रूप न ध्यानालय लखिपावै ७००
इड़ा नाटिका चलै न कबहीं । पिंगलरहै अहर्निशि सबहीं ॥
छाया पुरुष मूड़बिन देखै। जानै ताकी मृत्युबिशेखै ७०१ स्वप्न
भेद भाषौं सुनुराजा। जो गुनि नरसाधै निजकाजा ॥ बानर
रीछ याम्यदिशिगावै। देखै तासु काल नियरावै ७०२ यूथयूथ
आवत जो बनिता। गांवतजात देखनहिंफाविता॥ दक्षिणदिशि
असनिरखै कोऊ । जीवन अल्पकाल तिहि होऊ ७०३ नारि
पुरुष सपने करहांसी। होइ अवशि सो यमपुरबासी ॥ बासस
लालधरे पै होई। रक्त गंध लेपन कियजोई ७०४ दो० । केश
मुड़ाये जायचढ़ि दक्षिण दिशि चण्डोल। देखै सपनो कोउनर
ताकर मरण नडोल ७०५ चौ० । सपनकह्यों मैं निज बुधि
बानी। सुनहु अलक्षण कहौं बखानी ॥ पूजारामनभावैजाही।
मातु पिता गुरु द्रोहकराही ७०६ नहिं सत्संगति जाहि सुहाई।
विद्यागुरु द्विजते निठुराई।॥ वेद पुराण न जाहि सुहाना ।करै
साधु गुरुकी अपमाना ७०७ इष्टदेव पूजानहिं साजा । ये सब
गनो अलक्षणराजा ॥ औरौ कहौं ज्ञान गुणरीती । जातेहोइ
रामपदप्रीती ७०८ इन्द्री सकल करै बश अपने। लोभ मोह मद

करैनसपने ॥ मनक्रम बचन रामचितधरई। सत्संगति सेवा द्विज करई ७०९ पढ़ै सुनै नितकथा पुराना। काम क्रोध मद मनहिं नआना ॥ पूजै इष्ट देव मनलाई। मिल सोनीर समीरहिजाई ७१० जीतै आसन श्वास बनाई। जीतै संग इन्द्रि दुखदाई ॥ स्थूलरूप भगवत को जोई। मनबुधि तहां लगावै सोई ७११ देह बिशेष थूल यहगाई। यत्र बिश्व सब परत लखाई ॥ आण्ड कोश इहि बपुके माहीं। सप्तावरण सहित हैं जाहीं ७१२ यह बैराजपुरुष भगवाना। धारण आश्रय सोहमहाना ॥ जिनके पाद मूलपाताला। पार्ष्णि प्रपद रसातल चाला ७१३ गुल्फ महातल जासुसुहाये। जिनके जंघ तलातलगाये ॥ द्वेजानुनी सुतलमधिसोहैं। बितलातलद्वौउरुमनमोहैं ७१४ जघनमहीतल शोभापावैं। नाभिनभस्तल माहँ सुहावैं ॥ ज्योति अनीक उर स्थलराजे। ग्रीवा महर्वदन जनसाजै ७१५ आदि पुरुष तप लोकरराटी। सत्यलोक शीरष परिपाटी ॥ इन्द्र भुजादिग करण सुहावैं। श्रोत्रअमुष्य शब्द श्रुतिगावैं ७१६ जिननासा अ-श्विनी कुमारा। घ्राणगंध मुख अग्निप्रचारा ॥ द्यो अक्षिणि अरु चक्षु पतंगा। पक्ष बिष्णु दिन रात्रिअभंगा ७१७ भ्रूविजृंभ परमेष्ठिमकाना। अप तालू रस जिह्व बखाना ॥ छन्द अनन्त शीश श्रुतिगावैं। भगवत को यम दाढ़ कहावै ७१८ स्नेह कला द्विज नाम गनाया। हास जनोन्मादकहै माया ॥ जासु अपांग मोक्ष श्रुति गावै। ब्रीड़ा उत्तरओष्ठ कहावै ७१९ दो०। अधरलोभ अस्तन धरम अधरम पृष्ठवखान ॥ मेढ्रपितामह तासु के वृषण मित्र सुखदान ७२० जिनकी कुक्षिसमुद्र हैं पर्वत अस्थि समूह। नाड़ी सरिता जासुकी बृक्षवपूरुहजूह ७२१ गतिवयश्वास समीरहै कर्मगुणन पखाह। अम्बुवाह प्रभु केश हैं संध्या वाससजाहँ ७२२ है अव्यक्त हृदय जिहि मन चंद्र-मासुजान ॥ पुनिविज्ञान शक्तिजिहि महिमाकहत अमान७२३ अंतःकरणगिरित्र जिन अश्व अश्वतरि जोइ। उष्ट्र गजादिक

जानिये श्रीभगवत नख सोइ ७२४ चौ० ॥ श्रोणि देशसब
मृग पशुसोहैं। तिन व्याकरण पक्षिमनमोहैं ॥ मनुर्मनीषाहैंजि
नकेरी। मनुजनिवास जहां सबहेरी ७२५ विद्याधरगंधर्व सुहाये।
चारणाप्सरगणसुखछाये॥ स्वरस्मृती जिनको श्रुतिगावैं। असुरा
नीकबीर्य्य छवि पावैं ७२६ ब्रह्मानन भुज क्षत्रिकहावा। बिट्ऊरु
अंघ्रि शूद्र छबि पावा॥ नाना गण उपपन्न सुहावा । द्रव्या
त्मक यहरूप महावा ७२७ यह जोहै ईश्वर का रूपा। मैंतोसों
वरणों नर भूपा॥ बपुषि थविष्टे जो मनलावै । जान अनत
कहुँ बुद्धिन पावै ७२८ आतमपात सर्बत्र बिलोकै । सब हरि
हीन गुनै जग शोकै ॥ सत्यानँद निधि श्रीभगवाना । जाइ
अखेद लोक धरिध्याना ७२९ आतम योनि पूरुबया भांती ।
धारो ध्यान असुर आराती ॥ नष्टस्मृति लहि बिरचे लोका।
जाबिधि पूरुबजानि अशोका ७३० शब्द ब्रह्म करमारगयेहा।
भाषौं नृपाति सुनौ युतनेहा॥ धीअपार्थध्यायति करिनामन।
परिभूमतत्र अर्थलहतामन ७३१ मायामयी वासनामाहीं॥ रहे
सोइ तनमन सुधिनाहीं। अर्थमात्र तासोंकवि लोगा । धारत
सूक्ष्म विषयउरभोगा ७३२ जबतक सिद्धि होइ नहिंजावे॥
सिद्धिहेत पुनि रचै उपावे । भरम मात्र सबठामन देखै ॥ यत्न
सिद्धिहितकरै विशेखै ७३३ पृथ्वी सुन्दर सहजसुहाई। शय्या
हित किमिकरैउपाई॥ बाहू ईश्वर दीन्हबनाई ॥ उपवर्हण चिंता
किमिभाई ७३४ अंजुलि सुभग बाँधिजल पीजै । पात्र हेत
उद्यम किमिकीजै॥ बसनहेत श्रमकरौ कि भारी। करौगुदारा
बल्कलधारी ७३५ चीरकाहमारगमें नांहीं। लीजै पहिरि लखौ
तुम जाहीं॥ मांगत भीख किहोइ उदासी। लिये ठांढ़ अंघ्रिप
फलरासी ७३६ सुन्दर सलिल सरित बहुधारा। कूप हेत किमि
करत बिचारा॥ सुभग कन्दरा राम बनाई। मन्दिर हित कि-
मि करत उपाई ७३७ शरणागत नाहक नरधरते । काश्री
रामन रक्षा करते॥ धन मद अंध नरन के पासा । नाहक

होत जाइ जनदासा ७३८ दो०। इमि निजमन स्वतसिद्ध है आत्म प्रियार्थ अनन्त। भजिय निवृत नियतार्थ है जग उपराम भनन्त दो०। ७३९ कोई जन निज हृदय में पुरुषांगुष्ठ प्रमान॥ लखत चतुर्भुज चक्रधर गदा कमल सुखदान ७४० चौ०॥ मुख प्रसन्न कमलायत लोचन। पीताम्बर युत मणि दुख मोचन॥ महारत्न शोभित तन माहीं। मुकुटकिरीटांगद पुट जाहीं ७४१ मकराकृत कुण्डल छबि देहीं। गोल कपोलन मन हरि लेहीं॥ विकसित हृदय कमलके माहीं। योगेश्वर थापित पद जाहीं ७४२ कौस्तुभ रत्न कण्ठ मधि सोहै। उर श्रीवत्स चिह्न मन मोहै॥ बनमाला अतिशय सुखदाई। अंगुलीय मेखला सुहाई ७४३ नूपुर कंकण मोल अपारा। कुंचितचिक्कन निर्मल बारा॥ आनन कोटि मदन मद नाशक॥ हास कोटि विधु तेज प्रकाशक ७४४ कोर कटाक्ष कृपा जन कारक। भौंहँ कृपा भय काल विदारक॥ याविधि देखै रूप सुहावा। हृदय कमल में शोभा पावा ७४५ दृढ़ है अंग एक इक देखै। लखि आगे पुनि लखै विशेखै॥ जब लगि निर्गुण ब्रह्म न जानै। तब लग ध्यान इहै उर आनै ७४६ स्थिर सुखआसन आश्रित हैकै। जगके परे जान चित दैकै॥ जीतैप्राण वायु मनकाहीं। शुद्ध बुद्धि करि राखै ताहीं ७४७ आतमकाहँ आत्ममहँ रोंकी। पाइ शांति तब होइ विशोकी॥ जहाँ काल अनिमिष नहिं गायो। और देव को खोज मिटायो ७४८ सतरज तमगुणएको नाहीं। महत्प्रधान विकार न जाहीं॥ परपद वैष्णव नाम कहायो। नेति नेति श्रुति जाहि बतायो ७४९ दुष्टभाव सब सों तजि दीजै। एक रूप मानस गुनि लीजै॥ इमि विज्ञान दृष्टि बल पाई। रंधित आशय पूरण भाई ७५० गुदा पीड्य निज पार्ष्णिन करिकै। वायु उठावै पुनि बलधरिकै॥ नाभी हृदिउर मांझ लयावै। तहँ सो तालु मूल चलि आवै ७५१ भ्रू अंतर आवै पुनि चलिकै। अर्द्ध मुहूर्त्त रहैतहँ भलिकै॥ मस्तकफोरि

तजै यह देहा। तब पावै वह सुन्दरगेहा ७५२ ताते नृप यहनीक विचारा। अब जैहौं भवसागर पारा॥ गालव बहु गुण ज्ञान बुझावा। भूपति तपतजि आननभावा ७५३ चन्द्रहास्य सुन्दर छबिछाजा। पठये मदन बुलावन राजा॥ बंश बिहीन लेउँकल एता। दै कन्या सब साजसमेता ७५४ दो०। चन्द्रहास्य मारग मिले हरिजन सुकृतगात॥ कह्यो मदन शिरनाइ तिनतातकहां तुमजात ७५५ चौ०॥ चन्द्रहास्य बोले असबैना। कतहुँ दीख अम्बिका ऐना॥ आयसुमंत्री कीन्ह अमाना। हमदेवी पूजा नहिंजाना ७५६ शालग्राम करहिं नितपूजा। जानौं हरितजि देवन दूजा॥ मदन कह्यामैं पूजनजाऊं। तुम अबजाहु भूपके ठाऊं ७५७ इमि रावतजन गोकुल चन्दा। मंत्रीपुत्र परोयम फन्दा॥ पूजन साज मदन सबलीन्हा। कुवँरहि बिदा भूप पहँ कीन्हा ७५८ चंद्रहास्य लखिसभा सुखारी। अंग अनंग रूप अनुहारी॥ जाइ द्विजन को कीन्ह प्रणामा। लही आशिषामन अभि रामा ७५९ सकल समाज बिवाह सजाई। बेदरीति कुलरीति कराई॥ घटी बस्तु तहँ एकौ नाहीं। चम्पक मालिनि दीन्ह बिवाही ७६० तिहि दहेजकर कहौंसमाजू। सर्बसद्रब्य दीन्ह जिनराजू॥ तापस भेषबनाइ भुआरा। तजो गोह माया परिवारा ७६१ कुवँरहि सिंहासन बैठाये। तपहित बिपिन महीप सिधाये॥ यहिबिधि चन्द्रहास्य भेराजा। सुनहु सचिवँ सुत भइजसिसाजा ७६२ मदन जातभा अशकुनभारी। लखी लरत मारग मंजारी॥ चौंके सहित थार गिरिधरणी। चला रुधिर मंत्रीकी करणी ७६३ बहुरि काकबोला तिहिशीशा। उठो सँभारि सुमिरि गौरीशा॥ जाके पिता पातकी ऐसे। तासु बंश तिष्ठै पुनि कैसे ७६४ चन्द्रहास्य बिधिकरु कुशलाई। हम पठये अकेल ढिगराई॥ इन शोचन शोचत मतिधीरा। पहुँचे भवन अम्बिकातीरा ७६५ छन्दमनहरण। गयो सोसभीतवतभवन कपाट खोले सुनतपशुघ्न शब्दकर द्रुतआइयो। पाछिश

त्रिशूल खड्ग निशितजघान अंग सुवन सुमंत्रि इमिवचन सुना इयो ॥ चण्डिके भो बैष्णविलुलाय दैत्यहों नमातुं शुंभहू निशुंभ रक्तबीजहू नगाइयो । कौनहेत मारत त्रिशूल लै सुमातु मोहिं पूजिबे केहेतु भौनतेरे मैं सिधाइयो ७६६ दो० । चन्द्रहास्य की ओरते आयों पूजन अम्ब। लीजै पूजा क्रोधतजि पाहिपाहि जगदम्ब ७६७ चौ० । डोम अधम मंत्रीके प्रेरे । लीन्ह खड्ग उठि काहुनहेरे ॥ किये घात उन मदन कुमारा । प्राण बिहीन अवनि परडारा ७६८ पुनि डोमन चीन्हा तिहिबारा । सांचो सचिव सुवन यह मारा ॥ करि अनहित हरिभक्त सतावा । ताको फल मंत्रीं भलपावा ७६९ दो० । अनहित कौकाहू करै ताकर अनहित होत ॥ पर उपकारी पुरुष को दिनदिन होत उदोत ७७० चौ० ॥ चन्द्रहास्य नृप सुता समेता ।चढ़ि गयंदगे मन्त्री केता ॥ प्रथमहि कौकह मंत्री पाही । चन्द्रहास्य नृपसुता बिवाही ७७१ तबलगि चन्द्रहास्य चलिआये । उतरि भूमि मंत्रिहि शिरनाये॥ बहुरि सकल बृत्तान्त सुनाये। पूजन देविहि मदन सिधाये७७२ नृप कन्या बिवाह निजगाये । जाबिधि भूपति बनहि सिधाये ॥ तुम्हरीकृपा भये हमराजा । पाये सर्वसु राज समाजा ७७३-अस सुनिपुनि मन सचिव बिचारा । डोमन अवशि मदनको मारा ॥ जस मैं हरिकर भक्त सतावा । ताकर फल तत्क्षण तसपावा७७४ छन्द रामगीतिका ॥ चलतभो कचछोरिबिलपत ऊर्द्ध बाहु अचेत । प्रेतथलिअवलोकियोज्वल दग्निभय को देत ॥ ताहि लखि बैतालहू कंकालभूतहुतत्र । कहत देखिये आइ यो यह अधिक हमसों अत्र ७७५ बोलियों तब प्रेत दूसर अधिक हम सों कौन । बधे ब्राह्मण तीनिपुनि विश्वास धनहर जौन ॥ मारियेपर निन्दकर जंतुघ्नमोकहँ जानं । विप्रहंताभ्रातममहैपुत्र पथिक जघान ७७६ कंहो सुनिकै प्रेत तीसर अधिक सबसो एह । मित्र द्रोहिकृतघ्न यह विश्वासहाकरिनेह ॥ दुष्टहै यह पापि दारुण भागिये ताजि अत्र । भागि भैरव भूतगे कहि धृष्ट धीगो

तत्र ७७७ दो०। चिता काष्ठलै ज्वलितसो चलत भयो गहि हाथ। जाइ मदन देखत भयो खण्डित परे अनाथ ७७८ चिता काठ तजि रोइकै मिलत भयो लपिटाइ। चन्द्रहास्य आये इतहि उठहु पुत्र हरषाइ ७७९ धन अपार युत दीजिये विषया कन्या जोइ। भक्त सतायोअर्थ विन मैंफल पायों सोइ ७८० चौ०॥ विरचित धातु खंभ शिर मारा। परोगतासु भूमि तिहिं बारा॥ केहरि बाज बधिक खल कोई। मन इच्छा इनकी नहिं होई ७८१ जो हो चीतो चारौ केरा। खग मृग पशु नरनशैं घनेरा॥ राम भक्त कर तिहुँ पुर शाका। कबहूँ जातबार नहिं बांका ७८२ कौरव कोट कृशानु लगाई। पाँडु सुतन नहिं सके जराई॥ पुरटकशिपु हरि भक्त सतावा। तनु नृसिंह धरि ताहि नशावा ७८३ भक्त द्रोह कीन्हो दुर्बासा। फिरे भ्रमत बहु चक्रकि त्रासा॥ सनकादिक जय बिजय सताये। तीनि जन्म तामस तनुपाये ७८४ अनहित भक्त केर कर जोई। ताकी गति मंत्री समहोई॥ या विधि होत भयो भिनुसारा। तापस एक आवतिहि बारा ७८५ देखि सचिव गति सुवन समेता। प्राण हीन-भूपरे अचेता॥ चन्द्रहास्य सो जाय बखाना। मदन परेमंत्री गत प्राना ७८६ भेचकृत सुनि अचरज बैना। यह कस भयो कहतगुण ऐना॥ पहुँचे जाइ सघन बन माहीं। देखो मंत्रि विकल सुधि नाहीं ७८७ प्राण हीन तहँ मदनहिं देखा। भवन अम्बिका जाइ विशेखा॥ मोहि गृहाण क्रोधअति जोई। मारो देवि बृथा इन सोई ७८८ करि मज्जन पवित्र सो भयऊ। वाचनस्वस्ति बहुरितहँ कयऊ॥ चन्द्रहास्य पुनि कुण्डखनावा। होमभवानी भवन करावा ७८९ बलिदीपादिक प्रथमहिं करिकै। पायस सिता आज्य तिल धरिकै॥ हुतीकाटि भूपति निजदेहा। केवल सचिव कुमारसनेहा ७९० खड्ग ब्रह्मोरिहाथ मेंलीन्हा। काटन शीश हेत चित दीन्हा॥ प्रगटि भवानी बोली बानी। मैं नहिं कीन्ह मदन जियहानी ७९१ काटिन जीव

जंतु जगमाहीं। मारेमहा पापसबकाहीं॥ धृष्टबुद्धिमंत्रीके पापा। मदन मरेनहिं काहू शापा ७६२ जो कुदृष्टि हरिजनको हेरा। सो दुख अवशिलहत बहुतेरा॥ कहदेवी प्रसन्नहमआहीं। जो भावै मांगहु मोपाहीं ७९३ दीजै भक्ति मोहिं हरिमाता। जीवै मदन उठै सहताता॥ देवी तब कहि इविधि पुकारा। भगवत भक्ति लहौ सुखसारा ७९४ पुत्र तुमारे होवैंशूरा। हरिहि प्रसन्न करैं परिपूरा॥ बालापनसे चरित तुमारा। जोनर नारि सुनैसुख सारा ७९५ भक्तिसमेत पढ़ैजोकोई। भगवतभक्ति लहैदृढ़सोई॥ ममआगे आवहु गुणऐना। मूँदहुमुहूर्त्तार्ध निजनैना ७९६ कर शिर वैष्णवविधरोविशेखा। बहुरिमदनमंत्री दिशिदेखा॥ दोऊ उठिबैठे तिहिबारा॥ चन्द्रहास्य चखखोलि निहारा ७९७ निर्व्रण निजतनलखोविशेखा। वैष्णविशक्ति तहाँ नहिंदेखा॥नभसोंपुष्प वृष्टिलाखिलीन्हा।पुनि प्रणाम मंत्रीको कीन्हा ७९८ चन्द्रहास्य हरिभक्त सुहाये। भेटि मदनउर आँनदपाये॥रामभक्तकी असि प्रभुताई। लीन्हो मंत्रिसपुत्र जियाई ७९९ दो०। विष्णुभवानीभेद नहिं सुनहु संत बुधज्ञाति। चन्द्रहास्य भूपतिभये मदन जिये याभाँति ८०० चन्द्रहास्य इमि कहतभे धृष्टबुद्धिसोंबैन॥ हरिकी माया जानिये जीवनमरण अहैन ८०१ चौ०॥ भजहु अधोक्षजको मन लाई। यहकहि भवन चले सुख पाई॥ आये सानँद सदन महीपा। भूप सुयशभा सातौ द्वीपा ८०२ सुनै कथा हरि भक्त सुहाई॥ कोटिजन्म अघजाइ नशाई। भोग विलास करै इहि लोका॥ अंतकाललह सुरपुर ओका ८०३ पुनि महीप बाजनबजवाये। विपुल दान महिदेवन पाये॥ मंत्री मदन महीपति कीन्हा। याविधि राम राज्यतिहि दीन्हा॥ ८०४ भे इमि चन्द्रहास्य नर पाला। बरणौं अब कुलिन्द कर हाला॥ मंत्री लीन्ह डाँड़िसब साजा। रहो भवन नहिं एकसमाजा ८०५ नारि सहित मनकीन विचारा। रोपिनि चिताजाइ तिहि बारा॥ चन्द्रहास्य उतगयो सँहारा। लीन्हो खल धनस-

कल हमारा ८०६ अब कसजीवन अस दुखदेखी ॥ मरण ठान
तिन हृदय विशेखी। हरिबंधन हरगुनि मनमाहीं ॥ दियोशेषध-
न विप्रन काहीं ८०७ प्रविशन जबहिं हुताशन लागे । कहो
कोउ दुत मंत्री आगे ॥ तबहित कर कुलिन्द नरनाहा । सहप
रिवार होत शिखिदाहा ८०८ पुरजन बचन सुनतसोधावा ॥
हरिप्रेरित कुलिन्द ढिग आवा। माकुलिन्द उरकरिय विषादा ॥
देहुँ देश धनयुत अह्लादा ८०६ करिपरितोषकुलिन्दहि आ-
वा। जियालाल प्रभुसकल बनावा ॥ चन्द्रहास्य नरेश बड़
भयऊ । सुनत कुलिन्द दुसह दुखगयऊ ८१० दो० । आये
सहित समाज निज कुन्तलपुरहि कुलिन्द ॥ बधुनसहित
निज तनय लखि हर्ष उदधि जिमि चन्द ८११ चौ० ॥ मंत्री
मन्दिर रहै छपाना । चन्द्रहास्य यश करैं बखाना ॥ मम कर
मंत्री पत्र पठावा । तासु प्रसंग राज्य हमपावा ८१२ महापुरुष
अवगुण नहिं माना । अपकारहि उपकार बखाना॥ या विधि
चन्द्रहास्य युत साजा। वर्ष तीनिसै कीन्ही राजा ८१३ विषया
तनय वीर रणधीरा । नाम मकरध्वज पुण्य शरीरा ॥ चम्पक
मालिनि कुँवर सुजाना। पद्म अच्छ गुण ज्ञान निधाना ८१४
बालापनते जप हरिनामा । हेत प्रीति अति शालग्रामा ॥ जो
नर चह भवसागर पारा । शालग्राम जपे निस्तारा ८१५ दो०।
शालग्राम समान है और न दूजो देव ॥ शूलपाणि सनकादि
सुर पावत कतहुँ न भेव ८१६ जातनकी छविको निरखि जात
न यमपुर कोइ ॥ मनभावन जिहि उर बसे मनभावन फलहोइ
८१७ जबहीं यज्ञ युधिष्ठिरसाजी। विजयहेत छांड़ो बर बाजी ॥
चारौंदिशा अश्व फिरि आवा। कुन्तलपुर समीपनियरावा ८१८
चन्द्रहास्य सुत यज्ञ तुरंगा। देखो चन्द्रबिम्ब सम अंगा ॥ बांचि
पत्र लैगे जहँ राजा। हर्षितभे सब सभा समाजा ८१९ भूपहि
अति आनँद भा भारी। जहां धनंजय तहां मुरारी ॥ बालापन
ते हम हरिसेवा। भे सहाय अब सुतबसुदेवा ८२० जिहिकारण

कुन्तलगे कानन । जपत जाहि शिव मुनि चतुरानन ॥ सो चलि आपुदरश हरिदीन्हा । तौंजनु कोटियज्ञ हमकीन्हा ८२१ अगम अगोचर जिहि श्रुति गावा । सो मम लोचन गोचर आ- वा ॥ देखौं कमलचरण मन लाई । कोटिजन्म अघ ओघ नशा- ई ८२२ सुनु मकरध्वज बचन हमारा । अर्जुन सों नहिं युद्ध बिचारा ॥ बड़ हरिजन हरिहैं तिहि संगा । देव युद्ध बिन यज्ञ तुरंगा ८२३ भरि सम्वत इन अश्व फिरावा । पार्थ श्रमित बहु पन्थ गँवावा ॥ एकै पक्ष यज्ञकर बाकी । आये जीति पुहुमि चहुँधाकी ८२४ उनहिं राखि होइब हय संगा। जाब सदल जहँ जाइ तुरंगा ॥ धन अनेक देवो सचुपाई । दन्ती अयुतन भार भराई ८२५ दो० । युगुलकुमारन सों कह्यो सजहु मिलन सब साज ॥ जन्म सुफल देखिय दरश चरणकमल यदुराज ८२६ चौ० । अस कहि भये सदल असवारा । विष्णुभक्त द्वौ संग कुमारा ॥ चन्द्रहास्य हरिअंग निहारा । अयुत अनंग अंगछबि हारा ८२७ रूप अलौकिक यदुकुल राजू। अयुत अतन तनलाग बियाजू ॥ रथते उतरि परे प्रभु चरणा । सोसुख मोसनजात न बरणा ८२८ हरि उठाय तिहि कंठलगावा । आनँद महाभूप उर छावा॥कुशल पूँछि सादर अतिहेता । कुशल दरश प्रभु कृपानि केता ८२९ चरण कमल गहि बारहिं बारा । लागे अस्तुति कर- न भुआरा ॥ अगुण स्वरूप अनंत तुमारा । चरित अमितको पावै पारा ८३० छन्द हरिगीतिका । तनधरो मीन नवीन प्रभु शंखा सुरहि सँहारिकै । लैबेद दीन्हेआनि बिधिकर बिबिधबिधि मनुहारिकै ॥ पुनि रूपकच्छप सिंधुपै चौदह रतन लाये मथी । महिमा तुम्हारी अचल कीरति बिदित युगचारिहु कथी ८३१ बाराह रूपबहोरि धीर हिरण्याक्ष निश्चर क्षयकरो । लाये पु- हुमि पाताल ते यश लोक तीनिहुं बिस्तरो ॥ तनधरो बावन यज्ञ पावन बली बलि छलि तल पठै । नरसिंह बहुरिस्वरूप धरि बध कियो हिरणाकुश शठै ८३२ प्रह्लाद को प्रभु इन्द्र

पदवी दीन्ह निज जन जानिकै। सच्चिदानन्द चरित्रमहिमाकहै कौन बखानिकै ॥ बहुरौ परशुधरभये तुम तब बीस एकहिबारहीं। छिति करी सकल निछत्र छीनी सहस बाहुकिबाहहीं ८३३ पुनि राम बपुधरि बधो रावण नृप बिभीषण शोभियो। अब कृष्णकामदरूप राजत कंसकेशी बध कियो ॥ मथुरा करे हरि उग्रसेनि नरेश यश तिहुंपुर भयो। अब द्वारका कंचन बसाई सकल पुरजन अघहयो ८३४ दो०। चरित अमित महिमा अमित अमित कथा बिस्तार। कहँलगि बरणै जीव जड़ शेषन पावतपार ८३५ चौ०। अभिमत बरदै हरिबैठारा। कुँवर युगल चरणनतर डारा ॥ प्रद्युम्न सम हरिजानि उठाये। दोऊ बीर निकट बैठाये ८३६ प्रभु पार्थहि पुनिलीन्ह बुलाई। चन्द्रहास मिलि आवहु जाई ॥ कहपारथ हँसिहैं सबलोगा। यह अनउचित नीति नहिं योगा ८३७ प्रभु कह उचित तुमहिं असि आई। प्रथमहिं ताहि मिलौ तुम जाई ॥ मिलहुजाइ महि पालहि ऐसे। पूजहुमन क्रम हम कहँ जैसे ८३८ गोशत देइ करै मखदाना। संत मिलन निहि सरसबखाना ॥ हरिहर जन जिन प्रीति बढ़ावा। तिन निज जन्म सुफल करिपावा ८३९ पारथ चले सुनत नृपपासा। प्रेम उमगि मन मुदित हुलासा ॥ आगे आइ जिष्णु नृप लीन्हे। मिले परस्पर निज निधि चीन्हे ८४० पुनि पुनि मिलहिं चरण गहि दोऊ। राम भक्त सुकृत तन होऊ ॥ पूछत कुशल क्षेम बहु भांती। सोसुख बर्णत बहुसकुचाती ८४१ दोउ कुंवर गहि पारथ चरणा। नाथ सदा हम तुम्हरी शरणा ॥ सादर पार्थ निकट बैठारे। बभ्रुवाह समतिनहिंनिहारे ८४२ प्रद्युम्न आदि मिले सबबीरा। बाजन बाजे महा गँभीरा ॥ चले लवाइ नगर महि पाला। दरश देखिहरि भये बिहाला ८४३ भोजन सकल प्रकार बनाई। बासर तीनि भई पहुनाई ॥ कृष्णपार्थं कीन्ही असि साजा। कीन्ह तिलक मकध्वज राजा ८४४ हरिजन कथा सुनैं चित दीन्हे। तिन

अनंत जन तीरथ कीन्हे ॥ बाढ़ै आयुर्बल दुखनाशा । चन्द्रहास कर सुनै प्रकाशा ८४५ चन्द्रहास अस मंत्र दृढ़ावा। बिषया सुतको नीति सिखावा ॥ कीजो देशकोश प्रति पाला॥ हमनतजब अब पद गोपाला ८४६ जौन हेतु कुन्तल तपसाधन । जपत जाहि शिव मुनि चतुरानन ॥ जाहि कतहुँमुनि ध्यान न पावा । सोहरि घर बैठे मम आवा ८४७ अस कहि पुनि पठवा धन नाना । गज पुर धर्मराज अस्थाना ॥ चन्द्रहास तब भे हरिसंगा । त्यागे सकल राज्य के अंगा ८४८ पूजन निष्ठा में सुख साने । चन्द्रहास महिपालबखाने ॥ जियालाल पावै किमि थाहा । भक्तचरित्र उदधि अवगाहा ८४९

चौ० ॥ कहौं अल्ह की कथासुहाई । भगवत भक्त चरित सुखदाई ॥ भगवत भक्त भये सो ऐसे । बालक निज़ मातहि प्रिय जैसे ८५० तीरथ यात्रामें इक बारा। कोउ नृपति करबाग निहारा ॥ उतरे काम वृक्षतर जाई । भगवत पूजन किय मन लाई ८५१ बागवान सों मांगे आमा । भगवत भोग लगावन कामा ॥ सोकह आमचाहिये जेते । लेहु तोरिमनभावत तेते ८५२ ताके कहत भई नहिं बारा । झुकि आई हरि ऊपरडारा ॥ तोरि तुरत सो भोग लगाये । यह अचरज माली लखिपाये ८५३ तुरतनृपति सों जाइ बताये । राजासुनि अबिलंबितआये॥ चरणन परो अल्हजी केरे । अस्तुति कीन्ह प्रेमरस घेरे ८५४ तनधन कोशराज्य परिवारा । अहै नाथ यहसकल तुम्हारा ॥ मोको नाथ जानि निज दासा । कृपा बिशेष करिय लखि पासा ८५५ जानि नृपति मनकी गति सोई । भगवत भक्ति दियो सुख मोई ॥ भगवत भक्ति भक्तकी बाता । कहत शेषसनकादि सकाता ८५६ दो० । लचीडार अचरज कहा नमत जिनहिं अजईश । जियालाल किहिं बिधि कहै अथवपु बिस्त्रा बीश ८५७ ॥

कथा पृथ्वीराज की ॥

चौ०॥ पृथ्वीराज नृपति सुखखानी । बीकानेर जासु रजधानी ॥ सो कल्याण सिंह के पूता । भगवत भक्त भये मजबूता ८५८ इन्द्रीजित चख नारि न देखत । ध्यानालय नित हरिको पेषत ॥ भगवत कीर्तन करत सुहाये । विरचत काव्य मुदित सुख पाये ८५६ भगवत सेवा निष्ठा भारी । विविध भाव भगवत उरधारी ॥ गे परदेश नृपति इकबारा । ध्यानालय हरि रूप निहारा ८६० एक समय ध्यानालय माहीं । भगवत वपुष विलोका नाहीं ॥ तबहिं सांड़िनी पुर दौराई । चरित पुजारिन दीन्ह बताई ८६१ होतमरम्मत भुवन प्रकाशा । द्वितियधिष्ण भगवत कर बासा ॥ अब भगवत निंज मंदिर आये । नृपति रूप ध्यानालय पाये ८६२ पुनि सुनि नृपति दूत मुख बानी । अति आनँद अचरज जिय मानी ॥ यह अभिलाष सदामन माहीं । मथुरामें त्यागहिं तन काहीं ८६३ बादशाह यह प्रण सुनि पायो । तिनहिं छलन हित द्वेषबढ़ायो ॥ दियआयसु काबुलसंग्रामा । किय यात्रा द्रुत नृपतिललामा ८६४ कल्प समान तासु क्षण जाहीं । यह सन्देह भई मनमाहीं ॥ मरणकाल निज जानि समीपा । कीन्हीं चिंता नृपकुलदीपा ८६५ मरण काल जादिन चलिआयो । तिनको भगवत तुरित बतायो ॥ जानि भये सांड़िनि असवारा । पहुँचे मथुरानगर मँझारा ८६६ दीन्हीं देह त्यागि तिहि भूमी । जहँतनुतजे जन्म नहिं घूमी ॥ हरिप्रण इमि राख्यो तिन केरा । प्रभु पालत भक्तन सबबेरा ८६७ एक और हैं नृपकोहाला । वरणौं सोउ सुमिरि गोपाला ॥ एक समय बन माँझ भुलाने । सदल महीप क्षुधित अकुलाने ८६८ तब सीतापति रचो उपाई । मारग दीन्हो ग्राम बनाई ॥ सब प्रकार को सुख तहँ पावा । राजा हृदय हरो दुख दावा ८६९ या विधि पृथ्वीराज कहानी । जियालाल वरणी सुखदानी ॥

निर्मल सुयश जगतमहँ छाई । गे तनुत्यागिनिकट रघुराई ८७०॥

कथा धना भक्तकी ॥

चौ० ॥ धना जाति के जाट बखाने । भगवत भक्त भये सुख साने ॥ बालापन निज घरकर बासा । तहँ ब्राह्मण आयो हरि दासा ८७१ पूजन हरिको करै सुहावै । भोग लगाइक भोजन पावै ॥ धना कहो मूरति इकदीजै । हमहूं हरिको पूजन कीजै ८७२ अति हठ लखि द्विज मूरति दीन्हो । धना लगाइ नयन शिरलीन्हो ॥ प्रथमहिं आपु कीन्ह अस्नाना । मूरति पूजि बहुत सुख माना ८७३ माता लै रोटी जब दीन्हा । भगवत को अर्पण तिन कीन्हा ॥ आंखी मूंदि बैठ तिन आगे । भोग लगावत अति अनुरागे ८७४ बड़ी बेर बीती तिनकाहीं । भगवत भोजन कीन्हों नाहीं ॥ धना बिबिध बिधि बिनती लाई । नहिं भोजन कीन्हों रघुराई ८७५ कीन्हीं बिबिध दण्डवत तबहीं । नहिं भोजन कीन्हों हरि जबहीं ॥ रोटी दीन्हीं ताल बहाई । लागे बहुरि चरावन गाई ८७६ दो० । या बिधि बीते बहुत दिन हरि भोजन नहिं कीन । आपहु भोजन बिन रहे डारि तालनितदीन ८७७ चौ० । अशन हीन तनु सूखन लागो । करै न भोजन हरि अनुरागो ॥ इन्द्री अबल भई तिनकेरी । निर्बल देह भई बहुतेरी ८७८ क्षुधा बिवश तन कांपन लागा । तजो न धीरज सो बड़भागा ॥ भे ब्याकुल बहु तजो न नेहा । चाहत प्राण जान तजि देहा ८७९ छूटत प्राण जानि भगवाना । चले भक्त बश कृपानिधाना ॥ भोजन करन लाग हरषाई । धना बिलोको शीश उठाई ८८० आधा भोजन हरि करि लयऊ । तबहीं धना कहत इमि भयऊ ॥ अबसब भोजन आपै खैहौ । कै तनको हमहूँ को दैहौ ८८१ सुनि भगवत हँसि तुरतहि दीन्हा । धना हर्ष युत भोजन कीन्हा ॥ या बिधि दिन प्रति भोग लगावैं । भगवत सह सुख पूरब पावैं ८८२ या बिधि बहुत

दिवस चालि गयऊ । तब हरि आप बिचारत भयऊ ॥ हम याको भोजन नित करते । टहल कछू मन में नहिं धरते ८८३ यह गुनि पूँछि धना सों आई । लागे रोज चरावन गाई ॥ एक बार सोई द्विज आयो । हाल धना तासों सब गायो ८८४ पहिले बहुत दुःख दरशाये । अबतौ गऊ चरावन लाये ॥ सुनत विप्र बड़ अचरज लाई । कह मोकहँ हरि देहु लखाई ८८५ धना लवाइ तिनहिं दरशाये । देखि बिप्र मन आनँद पाये ॥ या बिधि धना भक्त सुखदाई । हरि आयसु काशी में आई ८८६ रामानन्द मंत्र तिन लीन्हा । गुरु आयसु मस्तक धरि कीन्हा ॥ घर में आइ साधु की सेवा । लागे करन त्यागि सब भेवा ८८७ हरि को रूप हृदय महँ देखैं । सुमिरण सेवन करत बिशेखैं ॥ वापन चल गन्दुम इक दीना । मारग मिलिगे साधु प्रवीना ८८८ सबगोधूम्र तिनहिं दैदीन्हा । खेत जुताइ मयावन कीन्हा ॥ घरको चलेजात भे जबहीं । हरि बिचार कीन्हो मन तबहीं ८८९ याको दीजै खेत जमाई । नाहिंत जगमें होइ हँसाई ॥ यहगुनि सुन्दर खेत जमावा । धनातीर सब लोगन गावा ८९० सुनत धना मनमाहँ बिचारी । हँसीकरत ये लोग हमारी ॥ सबकेकहे लखों पुनि जाई । जामो सुन्दर खेत महाई ८९१ हरिकी कृपा अधिक पहिंचानी । डूबनलगे प्रेमरस पानी ॥ हरिकी सेवा में लवलीना । कीन्हो मनहिं भक्ति जल मीना ८९२ या बिधि धना भक्त की गाथा । मैं बरणी हिय धरि रघुनाथा ॥ साधु चरित्र उदधि अवगाहा । जियालाल किमिपावै थाहा ८९३ ॥

कथा देवाजी की ॥

चौ० । मंदिर एक उदयपुर नेरा । रूप चतुर्भुज स्वामीकेरा ॥ देवा नाम पुजारी तहँवाँ । भयो बृद्ध पूजाकरि जहँवाँ ८९४ एक दिवसकर हाल सुहावा । राना उदयपुर कर आवा ॥ भगवत सोइ रहे तिहि काला । देवा लिय उतारि जो माला ८९५

लीन्ह लपेटि शीश निज माहीं । राना आइगयो क्षण ताहीं ॥
दीन्हो डारि गले सो माला । राना लखो श्वेत इकबाला ८९६
देवाजी से पूँछन लयऊ । का बुढ़ाइ भगवत अब गयऊ ८९७
सुनि देवाजी बोले बानी । गेबुढ़ाइ अब शारँगपानी ॥ प्रातः
काल देखब कह राना । सुनि देवा मन विस्मय माना ८९८
अस्तुति करनलाग मनुमारी । जय सीतापति अवध बिहारी ॥
जय रघुनंदन जयति खरारी । दैत्यदमन तारण ऋषिनारी ८९९
जय शंकरधनु खण्डन हारे । जयति भक्तजनके रखवारे ॥ जय
भृगुनन्दन मान निवारण । शबरी गृद्ध अजामिल तारण ९००
रावणारि खरदूषण नाशक । ज्ञान त्रिराग विवेक प्रकाशक ॥
भक्त पक्षके राखन हारे । जयकौशल्यानंद दुलारे ९०१ विनय
काहकरि जानौं स्वामी । नाथ नमामि नमामि नमामी ॥ पूजा
बन्दन मैं नहिं जानौं । केवल चरण आश तवआनौं ९०२ अहै
लाज अब रावर हाथों । जस चाहौ तस कीजिय नाथा ॥ या
विधि विनयकरत निशिबीती । उठि कीन्हिअस्नान सप्रीती ९०३
गे भगवत मन्दिर युत नेहा । श्वेत बाल देखे प्रभु देहा ॥ बढ़ो
प्रेम तन दशा भुलानी । अमित कृपा निज ऊपर जानी
९०४ तिहि अवसर राना तहँ आयो । श्वेत बाल लखि
विस्मय पायो ॥ जानो दियु लगाइ कछु देवा । ताहूकर
जानन चहभेवा ९०५ लैचिमटी इक बाल उखारा ॥ चली
तहांते रुधिर छछारा । लागो बालउखारन जबहीं ॥ नाक
सकोरी भगवत तबहीं ९०६ तदपितजो नहिं विना उखारे ।
भये वसन तिहि रुधिर प्रचारे ॥ अचरज लखि प्रगटो दुखभारी ।
गिरोमोह वश खाइ पछारी ९०७ तबयाविधि बोले भगवाना ।
होवै उदय पूर जो राना ॥ गद्दी पाइ न मंदिर आवै । रहै बालसो
दरशन पावै ९०८ देवाके चरणन परिराना ॥ गयोभुवन निज
उरदुख माना । भक्त कथा याविधि सुख खानी ॥ जियालाल
द्विज कहाबखानी ९०९ ॥

कथा दो लड़कियों की ॥

चौ० । द्वैकन्या क्षत्रीकुलजाई । तिनकी बरणौं कथा सुहाई ॥
नृपके गुरू एक दिन आये । भगवत पूजन में मनलाये ९१०
कन्यनकहो कि मूरति दीजै । हमहूंबाबा पूजन कीजै ॥ यहसुनि
शिल्य एकतिन दयऊ । नाम शिल्यजी कहन सुलयऊ ९११
पुनि कन्यन सों भाषोएहा । पूजोइनको सहित सनेहा ॥ जो
माँगि हौ इनसों सो पैहौ । मनक्रम वचन ध्यान जो लैहौ ९१२ ॥
यह सुनिप्रेम सहिततिन लीन्हा । भगवत पूजनमें मनदीन्हा ॥
ऐसा पूजन में मनलाई । जिनउरभगवत परेलखाई ९१३ एक
राज कन्याकी बाता । अबबरणौं न्यारी विख्याता ॥ वा कन्या
को चचासुहायो । तासु पिता ऊपर चढ़िआयो ९१४ भई लरा-
ई तहां अपारा । लीन्हो लूटि सकल भण्डारा ॥ लूटि गईमूरतिहू
जाकी । खान पान भूली सुधि ताकी ९१५ हरिबिन देखतज-
ग अँधियारा । प्रगट भयो दुख हृदय अपारा ॥ कोऊ कहोचचा
ढिग जाई । मूरतिनिजै लावहु किन जाई ९१६ सुनि यहगई
चचानिज तीरा । मूरति मांगी होइ अधीरा ॥ ताने कहो ढूंढ़ि
कै लीजै । कोऊ कहो हांक किनदीजै ९१७ जो हैं अति प्रिय
मिलिहैं आई । सुनि कन्या टेरन मनलाई ॥ अहोशिल्यजी कहां
लुकाने । दासीको तजि आइपरानें ९१८ दीन्हीहांक कन्यकाज-
बहीं । प्रगटे आइ अग्रहरि तबहीं ॥ देखत लीन्हो हृदय लगाई ।
गइमणि मनहुँ भुजंगिनि पाई ९१९ देखत लोगन अचरज
माना । करन लाग भगवतगुण गाना ॥ यह इक कन्या चरित
सुहावा । वरणौं द्वितियकेरमनभावा ९२० भयो बिवाह प्रथम
तिहिकेरा । आये लोग लेन तिहि बेरा ॥ कन्या मनमें कीन्ह
बिचारा । अब पूजन किमि बनिहि हमारा ९२१ बिदा कीन्ह
माता पितु जबहीं । डोलामाहँ हरिहि लियतबहीं ॥ सेवक सेवकि
संग न लीन्हा । आपुहि गमन तासु सँगकीन्हा ९२२ मारग

चलत भईवह जबहीं। बोलोपति ताको वहतबहीं॥ तिहिबोलन
हित उद्यम कीन्हा। तब कन्या कछु उतर न दीन्हा ६२३ तब
वह बोलत भोतिहि पाहीं। कौनपीर तुम्हरे उरमाहीं॥ हमको
दीजै दरद बताई। ताकी हम कछु करैं दवाई ६२४ सुनि कन्या
बोली तिहिपाहीं। छुवनचहौ जो ममतनकाहीं॥ भगवत भक्ति
करौ मनलाई। यह हम तुमते कहा दवाई ९२५ बचन सुनत
भो क्रोधितभारी। बढ़ै हुताशन जिमि घृतडारी॥ लीन्हो तत्
क्षण छीनिपिटारी। सहमूरति तड़ाग बिचडारी ९२६ भई वि-
कल अति लखि यहबाला। जाउर प्रकटो बिरह बिशाला॥खान
पान तत्क्षण तजिदीन्हा। सोहरिबिमुख जतन बहुकीन्हा ६२७
परवह नहिंमानी मनबाजा। मन्दिर जाइकहो सोहाला॥ तासु
सास बहुकीन्ह उपाई। कछु न सुहाइ बिना हरिपाई ९२८
करि विचार लैगे तिहिबारा। मारग ताल जहां हरिडारा॥ तब
कन्या इहि भांति पुकारी। गये कहां हो शारंगधारी ६२९
हे शिल्य जी टेर मम सुनिये। निजदासी अमोल मन गुनिये॥
रूठेकौने हेतु गुसांई। इहिदासी कहँलेहु जियाई ६३० परी कौन
मोसों तकसीरा। जो नहिं दूरिकरौ उरपीरा॥ निकरि नीर सों
बाहर आवहु। मैं दासी को मरत जियावहु ६३१ जो तुमनाथ
निकसि नहिंऐहौ। मोकहँ फेरि जियत नहिंपैहौ॥ प्राणहुगये
न दुख यहजाई। देखौ समुझि मनहिं रघुराई ९३२ सदा भक्त
दुख दारनहारे। दीनबंधु संतन रखवारे॥ दूषणारि रावण मद
मोचन। जैसीतापति बारिज लोचन ६३३ शबरि सुकण्ठ बि-
भीषण तारण। गृद्ध अजामिल यवन उधारण॥ अंध्र पुलिन्द
हूण सुखदाई १०१३ जैसीतापति जैरघुराई ६३४ आवहु नि-
करि तुरत जलतेरे। दीन्ह हांक इमि भाखि करेरे॥ उच्चस्वर
करि रोवनलागी। हारघुनाथ कौन अघत्यागी\६३५ व्याकुल
गिरी भूमि तिहितीरा। जिमि पाठीन विकल बिननीरा॥ तासु
दशा देखी हरिजबहीं। आये निकासि तालसों तबहीं ६३६

देखत कन्या अति हरषानी । सूखत भूरुह जिमि लहपानी ॥ लीन्हो हृदय शीशनिजलाई । गैमणि बहुरि फणिक जिमिपाई ६३७ जैसे पंगुल निजगति पावै । जिमि दरिद्र गृहनवनिधि आवै ॥ हरषै अंधा लोचनपाई। तिमि कन्या उरसुख अधिकाई ६३८ कन्या केरदेखि यहहाला । भये सकल जन जन गोपाला ॥ भगवतमें निश्चय अतिकीन्हा । शुभदृढ़ नेमहृदयधरि लीन्हा ९३९ यह द्वैकन्यनकी इतिहासा। जियालाल द्विजकीन्ह प्रकासा ॥ भक्त चरित्र पार को पावै । कहि कहि कोटिन जन्म गवांवै ६४० ॥

संतदास की कथा ॥

चौ० ॥ संतदास हरि भक्त सुहाये। ग्रामनिवाइ बास सुख छाये ॥ भगवंत पूजनकरहिं सुहावा । एकदिवस तिन भोग लगावा ९४१ दो० । छप्पन विधि को भोग पुनि अर्पण कीन्हो जोइ । जगन्नाथजी हर्षयुत कीन्हो भोजन सोइ ९४२ जबहिं पुजारिन भोगलगावा । तब भगवत यहिभांति बतावा ॥ न्योता आजु भक्त ममदीन्हा । स्वाद सहित भोजन हमकीन्हा ९४३ क्षुधारही नहिं तनिक हमारे । यहहम तुमसों कहत पुकारे ॥ सुनत पुजारिन अचरजमाना। धन्यधन्यकरि भक्तबखाना ६४४

साखी गोपाल की कथा ॥

दो० । गौड़देशमें रहतहे द्वैब्राह्मण अभिराम । बृद्ध कुलीन समान कुल एकयुवा सुखधाम ६४५ तीरथ यात्रा में रहे एक साथ सुखरूप। रोगबिवश भोवृद्धद्विज बरणौंकथा अनूप ६४६ युवाबिप्र दूजो रहो संगी वाकोजौन। सेवा सों बहुबिधिकरी रोग मुक्तभो तौन ९४७ बृद्धबिप्र हर्षितकहो सुनिये मेरी बात। कन्या तोको देउँगो जो मेरी अँग्रजात ९४८ युवा अवस्था जौन द्विज यदपि कहो नाहिंलेन। करिसाखी गोपालको तदपि कहो सो देन ९४९ गये आपने देश जबमांगो बिप्र सुजान । पूँछि

सकल परिवारसों उचित नदेवो जान ९५० तबहिं सभाताकी भई लोगन पूंछोजासु। साची होवै कोउ जो आपुलयावै तासु ९५१ सुनत चलो द्विजहर्षयुत वृन्दाबन में आइ। मन्दिर श्रीगोपाल के शीशनवायो जाइ ९५२ भाषो श्रीगोपाल सों ब्राह्मण बुद्धि निकेत। चलिये साक्षी देनहित मैं आयों या हेत ९५३ बचन सुनत गोपालजी बोले धरि उरचैन। चलत कतहुँ प्रतिमा कबहुँ कहत बिप्र किमिबैन ९५४ तबहिं बिप्र बोलत भयो सुनिये श्रीमहराज। चलतीं जो प्रतिमा नहींबोलत कबसुखसाज ९५५ सुनत बिप्र चातुर बचन भेहरि बाद बिहीन। साक्षी ब्राह्मणंकेहितै चलिबेमें मनदीन९५६ ब्राह्मणसों भाषतभये चलिये आगेआपापीछे.हमआवतचले तजहु शोकसंताप९५७ कहो बिप्रसुनिये प्रभू मोहिंन परत अकीन। तुमछलिया बहुछल करत गोपिन सों छल कीन ९५८ मैंका बिधि निश्चय करौं आवत मेरे साथ। नूपुर धुनि ममपगनकीसुनत चलिय द्विज नाथ ९५९ घूमिन पीछे देखियो कहत एतनो और। हमहिं देखिहौ घूमि जहँ रहिहौं ताही ठौर ९६० इमि प्रणकरि हरि चलत भे करि आगे द्विजराज। निज गृह ढिग द्विज पहुँचिकह अबदेखौं सुखसाज ९६१ घूमिलखो द्विज हरिवपुष सुख दायक सुखखानि। रहे तासुही ठौर प्रभु चले प्रथम प्रणठानि ९६२ कहो सबन सों जाइ द्विज आये साच्छि हमार। नेहरि सों पूंछत भये कहि दीन्हो तिनसार ९६३ सुनि सबहीं आनन्द युत कीन्हो तासु बिवाह। हर्ष सहित नरनारि सब पूरो अधिक उछाह ९६४ जगन्नाथ के भुवन सों पांच कोश परमान। तहँ साखी गोपाल हैं वेदन सुयश बखान ९६५ छन्द चंचला॥ बंदिये पदारबिन्द साखि धेनु पालकाय। जासुद्वार शारदूल देखिये कराल काय॥ धिष्णमध्य रूप देखि पाप भे पलायमान। हर्षयुक्त अस्तुतीय जीयलाल कवियगान ९६६॥

सीवांजी की कथा ॥

छन्द बरवा ॥ सीवांजीकी गाथा अति सुखदान । जिया-लाल द्विज बर्णत मति अनुमान ॥ कावा जाति द्वारका वास स्थान । निशिदिन सुमिरत निश्चल श्री भगवान ९६७दो० । कोऊ अधिकारी सुभट बादशाह कर जौन । बहुत कटक लै संग निज चढ़ोद्वारका तौन ६६८ श्रीभगवत गृह पुरीयुत दीन्हीआगलगाय।अतिहि बिघ्न पुरमधिकियो दिये लोगबिक-लाय ६६६ भगवत चाह सहायता सीवांजी तब आइ । कछु सवार लै द्वारका रक्षाकरी महाइ ९७० चौ० । सबन मारि यमलोक पठायो । आपुअंत बैकुंठ सिधायो ॥ याबिधि सीवां की शुभगाथा । मैंबरणी हिय धरिरघुनाथा ६७१ ॥

सदनजी की कथा ॥

दो० । रहे सदन वैराग्य युतपुष्कसजाति जनिन्द। अवगुण दीन्हे त्यागि सब गतअघ भजत गुविन्द ९७२ चौ० । बेंचैं पलल लेइँ नित मोलैं। शाल ग्राम मूर्त्तिसों तोलैं ॥ हिंसाकरत जीवकी नाहीं । अधिक दयाजिनके उर माहीं. ६७३ एक स-मय साधू इक आये ॥ मूरति देखत अचरज पाये । मूरति ली-न्ह सदनसों मांगी ॥ चलोसाधु मानस अनुरागी ६७४ साधु काह हरि स्वप्न दिखाई । हमहिं सदन ढिग देहु पठाई ॥ साधू कहो योग्य नहिं एहा । जोप्रभुवसिये पुष्कसगेहा ६७५ कह हरि सुनिये वचन हमारा ॥ वहपुष्कसमम बड़ोपियारा । तौल-त हमहिं झूलना मानहिं ॥ मोल करत सो कीर्त्तन जानहिं ९७६ साधू सुनि याबिधि हरिबानी । सदनहिं मूरतिदियसुख दानी ॥ वर्णन कीन्ह बहुरि सब हाला । सुनत सदन मन भये बिहाला ॥ ६७७ चले सदन लै मूर्त्ति सहेता । जग-न्नाथ के दरशन हेता ॥ मारग माहँ तीयइक हेरा । मोही देखि रूपतिन केरा ९७८ निज मंदिर लैतिनहिं टिकावा ॥

दैआसन भोजन करवावा । राति माँझ तिनके ढिगआई ॥
कहो मोहिंलै चलौ लवाई ९७९ सदन कहो मो पै नहिं
होई । चाहौशीश कि काटै कोई ॥ ममपति शीश चहत सो
जाना । काटि तुरित सोवत गुनि आना ९८० धरिआगे
बोली सो एहा ॥ अबलै चलौ विगत सन्देहा । सदन कहो यह
कीन्हो काहा । हमहिंन कछू तिहारी चाहा ९८१ सुनतबचन
तिय शोर मचावा ॥ साधु जानिमैं याहि टिकावा । ममस्वामी
के लीन्हे प्राना ॥ चाहत मोहिं संगलै जाना ९८२ सुनियह
हाकिम पकरि मँगावा । तिनसों सब वृत्तांत सुनावा ॥ कहोस-
दन अपराध हमारी । देहु दण्ड जो इच्छ तुम्हारी ९८३ सुनि
हाकिम तिन करकटवावा ॥ तदपि सदनमन दुःखनपावा । पू-
रुब फलहि जानि निज देहा ॥ कीन्हो भगवत चरण सनेहा
९८४ गेसमीप पुरुषोत्तम जबहीं । जगन्नाथ पालकि निजतब
हीं ॥ दीन्हीं सदन हेत पहुँचाई । श्रीपुरुषोत्तमजन सुखदाई ॥
९८५ चढ़ेन सदन विनय बहुदेखी॥ भंगाज्ञा गुनिचढ़े विशेखी॥
उतरेजाइ सिंह दरवाजा । दरशदिये हर्षित महराजा ९८६ हरि
के दरश सदन क्रिय जबहीं ॥ आये जामिपाणि तिन तबहीं ।
अस्तुति कीन्हमहासुखपाई ॥ जियालाल वरणै किमिगाई९८७
जाति पांतिकी नाहिं विचारा । जो हरिसुमिरै सोइ पियारा ॥ या
विधि कहिपुराणसब दीन्हा । मैंकपोल कल्पितनाहिंकीन्हा९८८

कर्म्मानन्दजीकी कथा ॥

छन्द रामगीतिका ॥ भयेकर्मानन्दचारण जातिमाँहप्रवीन ।
काव्य रचना करत भगवत माहँ भावनवीन ॥ सुनत जिनकी
काव्य पघिलत चित्त आनँदहोत । जानाजिनजग झूठ मानस
भयोज्ञानउदोत ९८९ चलेतीरथ काहँ शिरपरहरि सिंहासन धा-
रि । छड़ीराखतगाड़िताामहँ देत झूलाडारि ॥ करत डेरा राति
दिन जहँ तहां को यह कर्म्म । करन डेरालागइकदिन रही छँड़ि

कहुँ भर्म ९९० तबहिं मनमें शोच आयो करन लाग बिचार।
कहन पुनि या भांति लागे ईश ऊपरदार॥ देत झारू भरतपा-
नी रचत भोजन तौन। शीश निज असवार करिकै चलत मा-
रग जौन ९९१ दासहै विन मोल को यह रहत सेवामाहिं।
नाथ को अधिकार कबहूं दास पावत नाहिं॥ सोउका अबसौंपि
दीन्हो हमहिं आजु सुरेश। बचन भाषे गूढ़ रावर देह देह प्रवे-
श ९९२ करन लाग विचार देखैं कौनकी तकसीर। जानि
मन भगवान जनकी हरीतत्त्वण पीर॥ दीन्ह छड़ी मँगाय कर्मा-
नंदहर्षितपाइ। गाड़िभूमि करंडहरि युत दीन्हहर्षिफुलाइ ९९३

कूल्हजी वा अल्हजी की कथा॥

चौ०॥ कूल्हअल्ह ये दोनों भाई। रजवाड़े जन्मे सुखदाई॥
कूल्ह बड़े भाई कर नामा। जन्महिते हरिभक्त ललामा ९९४
अल्ह नाम लघु भ्राता जोई। मद्यमांस रत निशिदिन सोई॥
मनुज काव्य में अति सुख पावै। भगवत यश समीप नहिंआ-
वै ९९५ इक दिन बड़ो भाइ कह भालिकै। दर्शन करहिं द्वार-
का चलिकै॥ दुर्लभ जन्म वृथा यह जाई। यह संसार असार
महाई ९९६ यह कहि दोनों बंधु सिधाये। पुरी द्वारका में च-
लि आये॥ बड़ो बंधु श्री हरिके आगे। रचित कवित्त पढ़न
निज लागे ९९७ रहे अल्ह जो छोटेभाई। तिनहिं देखि अति
लज्जा पाई॥ नयनन माहँ अश्रुभरिआये। कर्म आपने शोच
नलाये ९९८ आवतरहे कवित द्वैचारी। पढ़नलाग हरिओर
निहारी॥ भगवत हृदय प्रीति अति देखी। पुनिलज्जित मनमें
अवरेखी ९९९ कीर्त्तनसुनतहुँकारी दीन्हा। पुनि पुजार कहँ
आज्ञा कीन्हा॥ मालादेहु गले पहिराई। इनकीर्तनसों हमसुख
पाई १००० मालादेन पुजारी लागे। बोले अल्ह तबहिं अनुरा-
गे॥ हैया लायक ममबड़ भाई। माला तिनहिं देहुपहिराई १००१
कहोपुजारी सुनियेभाई। हमआज्ञापालकयदुराई॥ यहकहिमाल
गलेबिच दीन्हा। देखत कूल्ह दुःख जिय कीन्हा १००२ निज

भक्त सुखधाम सिरीकृष्ण चैतन्यप्रभु १०१५ चौ०। पूजा मानसि करतसदाई। एकसमय ऐसी मन आई॥ भगवत मूरति मिलै सुहाई। करैं प्रतिष्ठा भुवन बनाई १०१६ सुनि भगवत किय कृपा महाई। निज स्वरूप दिय कूप बताई॥ जगन्नाथ अस्थाप्यो लाई। भांतिन करन लाग सेवकाई १०१७ कबहुँ करत भगवत शृंगारा। राग भोग उत्साह अपारा॥ कबहुँ पालनेमाहँ झुलावैं। भांति भांति के लाड़ लड़ावैं १०१८ और काम मन में नहिं आनहिं। आठौ याम करहिं हरि ध्यानहिं॥ जगन्नाथ गाथा इमि गावा। साधु चरित्र पार को पावा १०१९ ॥

रामदास की कथा॥

छंदरामगीतिका। रहतहेडा कौरजीमें रामदासप्रवीन। द्वारका ढिगबड़े प्रेमी भक्त कृष्णनवीन॥ रहतएकादशी प्रेमसमेतजागत रात। जात श्रीरण छोर मन्दिर जागिबे हरषात १०२० भये वृद्ध बिचारि श्रीहरिकहो भक्तप्रवीन। करहु पूजन घरहि अब इहि भांति हमकहि दीन॥ यदपि आज्ञापाल तद्यपि रहोनाहीं जात। जात दरशनहेत तबहीं चित्त जब हरषात १०२१ देखि गमन कलेश तिनको सहोनहिं भगवान। चलहिंगे तुमसाथ लावहु शकट कृष्णबखान॥ सुनत सो लै गये तापरभये हरि असवार। निशामाहँ पुजारि सोवत जानिचल सुखसार १०२२ गये मारग प्रात मन्दिर देखियो पूजार। जानि छलकी बात तत्क्षण धाइयो तिहिबार॥ रामदास बिलोकि चिंता करत भे मनमाहिं। कहो हरियाबावली बैठारिये हमकाहिं १०२३ सुनत हरिके बैन बहुरि बिलोकि बावलिताहँ। दीन्ह हरि बैठाइ आइ पुजारगेचरणमाहँ॥ लगे मारन रामदासहि कीन्ह नाहिं बिचार। दीन्ह घायल डारिबहुरो शकट मांझ निहार १०२४ लखो नहिं रणछोर टीकम बावलीगे धाइ। तहां अचरज रुधिर पूरी बावली दिखराइ॥ कहोहरि तुम मारु कीन्ही भक्त ऊपरजोन। दीन्ह

अबहाला ॥ कोइ पूतना तनु निज कीन्हा । कृष्णरूप कोऊ ध-
रिलीन्हा ६ पीवन क्षीर लाग तिहि काला । प्राण समेत पीन
पयहाला ॥ कोई गोपि यशोदारूपा । हरिवपुधारो कोऊ अनू-
पा ७ तहां कृष्ण जी माटी खाई । छड़ी हाथ लै यशुमति धाई ॥
तबश्री हरि निज मुख दिखरायो । तीनो लोक तहां दरशायो ८
कोऊ तृणावर्त्तवपु कीन्हा । कृष्ण रूपकोऊ धरिलीन्हा ॥ लै सो
चलो ऊर्ध्व गतिधाई । ग्रीव पकरिदिय भूमि गिराई ६ शकटरूप
कोऊ तहँ कीन्हा । कोऊ कृष्ण रूप धरिलीन्हा ॥ कूजत पालन
क्रोधित गाता । क्षुधा बिबश मारी अनखाता १० कोउयशोदा
रूप बनाई । कोऊ भई कृष्ण सुखपाई ॥ हरि दधिमाखन दीन्ह
बहाई । बांधन हेत यशोदा धाई ११ बांधो सबगृह रज्जु बटोरी।
परीतबहुँ द्वै अंगुल थोरी ॥ मातु विकल लखि आपु बँधाये । स-
हित उलूखलबाहर आये १२ दो० । मणिग्रीवनलकूबरहि शाप
बिबश मुनितत्र। उन्मूलेयमलार्जुनहुँ प्रगटे दोऊ यत्र १३ कोऊ
गोपि कृष्ण बपु कयऊ। गोपिन के घर भीतरगयऊ ॥ कहूं ली-
न्ह दधि दूध चुराई । कहुँ माखन मर्कटन खवाई १४ ऊंचे
जानिन पावत जबहीं । रचत उपाय तहां यह तबहीं ॥ पीठ
उलूखल धारि उतारैं । वाकरिछिद्र पिये नित धारैं १५ जिहि
मन्दिर दधि दूधन पावैं । तहांजाइ यह रचैं उपावैं ॥ मूत्रपुरी-
ष करहिं घरमाहीं । सोवत बाल रुदाइ पराहीं १६ हरिरस
मगन मत्तइमि ग्वारी । बहुरौ लीलाकरन बिचारी ॥ बनीकृष्ण
गोपी सुख सेता ॥ बत्स चरावत ग्वाल समेता १७ तहां ब-
कासुर दानव आयो । लीन्हो कृष्णहिलीलि महायो ॥ भे शिखि
रूप कंठ जब गयऊ । तत्क्षण उगिलि असुर तब दयऊ १८
देखि कृष्ण राकस बपुभारी। दीन्हो चोंच चीरि महि डारी ॥
गोपी एक बत्स वपुधारी । भई एक श्रीकृष्ण मुरारी १८ बत्सा
सुर निज बत्सन देखी । श्रीहरि बधो भ्रमाइ बिशेखी ॥ ग्वाल
बाल सब जुरिकै आये । धन्य धन्य कहि बचन सुनाये ॥ २०

बहुरि अघासुर भई गुवारी । गोपी एक बनी बनवारी ॥ बैठी
मारग मुख बिस्तारी । ग्वालन युत आये गिरिधारी २१ करि
उपाय निश्चर संहारा । सुमन वृष्टि नभभई अपारा ॥ याविधि
लीला हरि की जेती । गोपिन कीन्ह तहां सब तेती २२ तन्म
य भई सकल इगि बाला । प्रगट भये तिन माँधि गोपाला ॥
यासों प्रगट बात यह आई । लीला नुकरण हरिहि सुहाई २३
मूरति पूजै कीरति गावै । भांति भांति के लाड लडावै ॥ मूर-
ति आठ भांति की गाई । शिला दारुमय लौहि कहाई २४
लेप्या लेख्या सैकति होई । मनोमयी मणिमय है सोई ॥ प्र-
तिमाआठ भांति सुख खानी । पूजैं मनक्रम शारँग पानी २५
मूरति को भगवत करि मानै । नाना भांति भाव उर आनै ॥
लखिश्रृंगार कबहुं सुख पावै । भांति २ के भोग लगावै २६
बरषाशीत उष्ण ऋतुआवै । तब तैसाही साज बनावै ॥ कबहूंप्रेम
मगनह्वै गावै । भगवत रूसे कबहुँ मनावै २७ कबहूं बिनयकरैकर
जोरी । दीनबंधु सुनु बिनती मोरी ॥ करतपाप दिनप्रतिमैंभारी ।
क्षमिये सो अपराध हमारी २८ कबहुँ यान पालकी बनावै ।
भगवत कोतिहि माहँ चढ़ावै ॥ जलक्रीड़ादिक तहां कराई ।
नदी तड़ागादिक सुखदाई २९ बहुरि प्रभुहि मंदिर लै आवै ।
तहां बिविध श्रृंगार बनावै ॥ पूजन करै महा सुखपाई । घंटाश-
ख मृदंग बजाई ३० भगवत आशसदा उर राखै । और आश
सपने नहिं भाखै ॥ चहै मांगि सो हरि सों लेई । आश और
की चित्तन देई ३१ कबहूं नाचै कबहूं गावै । कबहूँ प्रेम म-
गन ह्वै जावै ॥ कबहूं जंन्म महोत्सव करई । भगवत जन्म
जानि मुदभरई ३२ उत्सव करै जन्म गुनि भारी । गायक नृत्य
क लेइहँ कारी ॥ भगवत सन्मुख नृत्य करावै । भगवत को पा-
लनेझुलावै ३३ उत्सव बालजन्मके जेते । धनसमानकीजै सब
तेते ॥ निश्चय मूरति भगवतमानै । रंचभेद मनमें नहिंआनै ३४
जबलगि मन विश्वासन आवै । तबलगि हरिस्वरूपनहिंपावै ॥

कहौं एक ढेकथा सुनाई। जासोंमन विश्वास दृढ़ाई ३५ भक्त
मीरमाधव जोगाये ॥ लीलानुकरणहीसों पाये । प्रथम अमीर
नाम जिनकेरा ॥ महम्मदी मजहब सबेरा ३६ राह चलत
वृन्दावन आये। मुलाकात मुंशीकी पाये ॥मुंशी विष्णु उपास
क चीन्हा । लीला रासबड़ाई कीन्हा ३७ सुनि अमीर देखन
चित दीन्हे ॥ मुंशी बोलि समाजी लीन्हे । रासहोन लागेति
हि काला । लखि अमीर मन भयो विहाला ३८ भगवत मोह
न रूपनिहारी। तनधन की सब सुरति बिसारी ॥ पूरण मननि
ज दीन्ह लगाई। गेभगवत के रूप समाई ३६ बहुरि समीपर-
होवन जेता ॥भगवतभेंट कीन्ह तिन तेता ॥ गृह परिवारत्याग
जग कीन्हा ॥ वस्त्रादिकनं त्यागि पुनि दीन्हा४० कृष्ण कृष्ण
रसनानिज बोलैं। ढूंढ़त हरिहि कुंजबन डोलैं ॥ अनुक्षणहरि
कोरटत निहारा । नाम मीर माधव जंनधारा ॥ ४१ गिनती
हरि भक्तन में धारी। इनकी कविता ललित पियारी॥ बालकृष्ण
केचरित बखाने ॥ रहे सदा भगवत रस साने४२सुनन भागवत
इच्छा कीन्हा। परकौ मन्दिर जानन दीन्हा ॥तिन मनकीअभि
लाष निहारी। कीन्ह घनेरी कृपामुरारी ४३ एक गुसाइँ भक्त
हरिकेरे॥ कीन्हाय सुभग व्रत तिनतेरे। लागे तिनहिं सुनावन
सोई ॥ श्रीभागवत नाम है जोई ४४ बीतिरात्रि बहु एकदिना
हीं। सोये माधव मीर तहाहीं ॥ क्षुधावंत निज भक्त निहारा।
अर्द्ध निशाहरिकीन्ह विचारा ४५माधवमीर आज्ञ ममप्राहुन।
इनसत्कार कीन्हहै काहुन ॥ इनको जो मैंहूँनं खवाऊं। वृथा
भक्त वत्सल कहवाऊँ॥यह विचारि मनलै निजथारा। लड्डवा
अपरजल बीधारा ॥ लोटा एक माहँ जललैकै । द्वादशवर्ष
बालवपु कैकै४७ लाइ जगाइतुरितसो दीन्हा। माधवमीरसुभो
जन कीन्हा ॥ सोये बहुरिभयो भिनुसारा। लगे पुजारी ढूँढ़नथा
रा ४८ ढूंढ़तथारतहां चलि आये। निकट मीर माधवके पाये ॥
मारो तिनहिं बहुत अज्ञाना। गये बहुरि मन्दिर भगवाना ४९

फटे वस्त्रभगवत के देखी। भगवत मूर्त्ति उदासविशेखी ॥ क्रोध युक्त पुनि हरिहि निहारी। कहो गुसाईं सुनाइ पुजारी ५० सुनि वृत्तांत गुसाँई पायो। नंगेपग दौरो द्रुत आयो ॥ शीश मीर माधव पगधारा। विनय प्रार्थना वहुत उचारा ५१ किय अपरा धक्षमातिन जबहीं। भगवत क्रोध शांतभातबहीं ॥ शिक्षातिन को दीन्ह महाई। मो सम जानो भक्त सदाई ५२ किय दिनै कलोगन सन्देहा। यमनहि कथा सुनावत एहा ॥ दूर करन तिनकी सन्देहा। कहो गुसांई सबनसन एहा ५३ सब जनमो सों कहौ बुझाई। कालिह कथा किहि बिधि मैं गाई ॥ कोऊक-छूनाहिं कहि पायो। कहन मीरमाधव मनलायो ५४ श्लोक अर्थ अच्छर भे जेते। कहे मीर माधौं सब तेते ॥ भे लज्जित सब लोग अभागे। बरणैं कथा अपर अबआगे ५५ राजा एक बिहारी हेता। अतरं पठायो बिष्णु निकेता ॥ देखि मीर माधव लै लीन्हा।—डारितुरंत भूमि में दीन्हा ५६ परत सु-गंध भवन मधि छाई। भये वस्त्र तर कुँवर कन्हाई ॥ श्रीनँद लाल अङ्गतर भयऊ। यह अचरज सब देखन लयऊ ५७ डाकू एक सुचन्दा नामा। डाका मारत सो सबठामा ॥ एकदिवसको चरित सुहायो। रासचरित्र कहूँ सुनिपायो ५८ तहां बहुत असबाब बिचारा। लाख रुपैया सुनो हँकारा ॥ करि अभिलाषा तुरत सिधायो। अस्त्र शस्त्र युत जन सँग लायो ५९ योधा साथ पंचशत लीन्हे। लोगन देखि महाभय कीन्हे ॥ हाहा शब्द भयो तिहि काला। भगेतुरत सबलोग बिहाला ६० भगवत रूप रासमें राजैं। कोटि काम छबि निरखत लाजैं ॥ देखि शोर गुल पूछन लागे। जाघर यहचरित्र तिहि आगे ६१ कहो तौन प्रभु डाकूआयो। सोई यहहलचाल मचायो ॥ सुनि भगवत मूरति कह एहा। आवन देउ नहीं सन्देहा ६२ तिहि अवसर डाकू वह आयो। हरणाभूषण चित्त चलायो ॥ गुणि भगवत मूरति यह हाला। उठि सिंहासन सों तत्काला ६३